mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-286 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
16 अक्टूबर 2024 बुधवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

अंतरराष्ट्रीय करियर...
@ पेज 5

संक्षिप्त समाचार

सलमान की वाय+सुरक्षा में बढ़ाया गया एक और घेरा

होगी नाकाबंदी

मुंबई (एजेंसी)। अपने करीबी दोस्त और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दीकी की हत्या के बाद जहां सलमान खान गहरे सदमे में हैं, वहीं एक्टर की सुरक्षा में एक और घेरा बढ़ा दिया गया है। इसी साल अप्रैल महीने में सलमान खान के घर पर हुई गोलीबारी के बाद उन्हें वाय

सिक्योरिटी दी गई थी। जबकि अब बाबा सिद्दीकी की हत्या और लॉरेंस बिश्नोई गैंग से खतरे के कारण एक्टर की वाय-प्लस सुरक्षा में एक और घेरा बढ़ा दिया गया है। मुंबई पुलिस अब अपनी निगरानी और कड़ी कर दी है। सलमान खान को अप्रैल महीने में ही वाई-प्लस सुरक्षा दी गई थी। इसमें एक्टर की गाड़ी के साथ-साथ पुलिस एस्कॉर्ट गाड़ी भी चलती है।

रेप मर्डर मामला

सुप्रीम कोर्ट ने पूछा-टास्क फोर्स ने अब तक क्या किया

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने रेप-मर्डर केस और वित्तीय अनियमितताओं के मामले में सीबीआई को 3 हफ्ते में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने को कहा है। कोर्ट ने बंगाल सरकार से पूछा कि टास्क फोर्स ने इस मामले में अब तक क्या किया। इस पर

सरकार ने जवाब दिया कि टास्क फोर्स को 7800 अस्पतालों ने जानकारी दी है। इसके आधार पर वो सुझाव देना चाहती है। कोर्ट ने राज्य के अस्पतालों में सिविक वॉलंटियर्स की नियुक्ति पर भी सवाल उठाए। दरअसल, आरोपी संजय रॉय कोलकाता पुलिस के साथ वॉलंटियर के तौर पर जुड़ा था। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने मामले की आगे की सुनवाई दीवाली की छुट्टियों के बाद के लिए टाल दी है। वहीं, घटना के विरोध में 5 अक्टूबर से जारी डॉक्टरों के आमरण अनशन का आज 10वां दिन है।

फ्रीबीज पर सुप्रीम कोर्ट का केंद्र और ईसी को नोटिस

याचिकाकर्ता की मांग-

मुफ्त की योजनाओं के वादे को रिश्वत घोषित करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजनीतिक दलों के द्वारा चुनाव से पहले मुफ्त की योजनाओं के वादों पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सीजेआई डीवाई चंद्रचुड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच

ने केंद्र सरकार और चुनाव आयोग को नोटिस जारी किया है। कर्नाटक के शशांक जे श्रीधर ने याचिका में चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों द्वारा किए गए मुफ्त योजनाओं के वादे को रिश्वत घोषित करने की मांग की है। चुनाव आयोग ऐसी योजनाओं पर फौरन रोक लगाए।

महाराष्ट्र और झारखंड में बज गया चुनावी बिगुल

- **इलेक्शन कमीशन ने किया चुनावी तारीखों का ऐलान, साथ में 47 सीटों पर उपचुनाव भी**
- **महाराष्ट्र में एक और झारखंड में 2 चरणों में होंगे चुनाव, 23 नवंबर को आएंगे सभी नतीजे**

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्शन कमीशन ने मंगलवार को महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव के साथ 47 विधानसभा और 2 संसदीय क्षेत्रों में चुनाव की तारीखों का ऐलान किया। महाराष्ट्र में सिंगल फेज में 20 नवंबर को और झारखंड में 2 फेज में चुनाव होंगे। पहले फेज में 13 नवंबर को और दूसरे फेज में 20 नवंबर को वोट डाले जाएंगे।

रिजल्ट 23 नवंबर को आएंगे। 47 विधानसभा और 2 लोकसभा सीटों पर उपचुनाव भी 2 फेज में होगा। 47 विधानसभा और एक लोकसभा सीट पर वोटिंग 13 नवंबर को की जाएगी। एक विधानसभा और एक लोकसभा सीट पर 20 नवंबर को मतदान होगा। नतीजे भी 23 नवंबर को आएंगे। महाराष्ट्र विधानसभा का कार्यकाल 26 नवंबर को, वहीं झारखंड विधानसभा का कार्यकाल 5 जनवरी 2025 को खत्म हो रहा है। झारखंड में फर्स्ट टाइम वोटर्स 11.84 लाख बढ़े हैं। सीईसी राजीव कुमार ने बताया कि झारखंड में 24 जिले और 81 विधानसभा सीटें हैं। 5 जनवरी 2025 को टर्म पूरा हो रहा है। 2.6 करोड़ वोटर्स हैं।

काउंटिंग ही साढ़े आठ बजे शुरू होती है तो आठ बजे कैसे बताने लगते हैं लीड

- फर्जी ट्रेंड दिखाने पर भड़के सीईसी राजीव कुमार

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र, झारखंड विधानसभा चुनाव समेत देशभर के अलग-अलग हिस्सों में होने वाले उपचुनाव की घोषणा कर दी है। इस दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त ने नतीजों से एक दिन पहले आने वाले एग्जिट पोल पर भी बात की और इसे 'नॉनसेंस' तक कह दिया। उन्होंने मीडिया का जिक्र करते हुए कहा कि मीडिया और खासतौर पर इलेक्ट्रोनिक मीडिया को इस पर ध्यान देना चाहिए की जब काउंटिंग की समय शुरू होता है वह 8 बजकर पांच मिनट से, दस मिनट से रिजल्ट दिखाना शुरू कर देते हैं, यह नॉनसेंस' है। उन्होंने कहा कि आधिकारिक तौर पर पहली काउंटिंग साढ़े आठ बजे शुरू होती है, लेकिन 8.05, 8.15 पर आने लगता है कि इतने की लीड, इतने की लीड, इतने की लीड,

एससीओ समिट में भाग लेने विदेश मंत्री एस जयशंकर इस्लामाबाद पहुंचे

- 9 साल बाद पाकिस्तान जाने वाले पहले नेता; नवाज बोले-मोदी आते तो अच्छा होता

इस्लामाबाद (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर एससीओ की बैठक के लिए पाकिस्तान पहुंच गए हैं। यहां छोटी बच्चियों ने फूल देकर उनका स्वागत किया।

वे 9 साल में पाकिस्तान जाने वाले पहले भारतीय नेता हैं। इससे पहले पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने एक इंटरव्यू में कहा था- एससीओ की मीटिंग में शामिल होने अगर मोदी आते तो ज्यादा अच्छा होता, मुझे उम्मीद है कि मैं उनसे जल्द मुलाकात करूंगा। दरअसल, पाकिस्तान ने अगस्त में प्रधानमंत्री मोदी को एससीओ का न्योता भेजा था, लेकिन दोनों देशों के बीच खराब रिश्तों के चलते विदेश मंत्री एस जयशंकर इस बैठक में शामिल हुए हैं।

जयशंकर पहले ही कह चुके हैं कि पाकिस्तान जाने का इकलौता मकसद एससीओ है, वे दोनों देशों के रिश्तों पर चर्चा नहीं करेंगे।

दिल्ली में पटाखे बैन, ऑनलाइन डिलीवरी भी नहीं हो पाएगी

- 1 जनवरी तक लागू रहेगा, भाजपा बोली-पटाखे प्रदूषण फैलाते हैं, एएपी वैज्ञानिक रिपोर्ट दिखाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। दीवाली से पहले दिल्ली में वायु प्रदूषण को नियंत्रण में रखने के लिए दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति ने 1 जनवरी 2025 तक पटाखों को बैन कर दिया है। सरकार के आदेश के मुताबिक पटाखे बनाने, उन्हें स्टोर करने, बेचने और इस्तेमाल पर बैन है। इतना ही नहीं पटाखों की ऑनलाइन डिलीवरी भी प्रतिबंधित रहेगी। इसमें ग्रीन पटाखे भी शामिल हैं। इस बैन को सख्ती से लागू कराने की जिम्मेदारी दिल्ली पुलिस को सौंपी गई है। दिल्ली पुलिस रोज इसकी रिपोर्ट प्रदूषण समिति को सौंपेगी। हालांकि, दिल्ली भाजपा ने पटाखों पर बैन के पीछे के औचित्य पर सवाल उठाया।

लॉरेन्स गैंग के साथ मिलकर काम कर रहे भारतीय एजेंट्स

कनाडा बोला-बिश्नोई गैंग के साथ भारत के एजेंट्स की है मिलीभगत

भारत ने कनाडा के आरोपों को किया खारिज, राजनयिकों को बुलाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और कनाडा के बिगड़ते रिश्तों के बीच अब लॉरेन्स बिश्नोई की एंट्री हो गई है। भारत की तरफ से कनाडा से अपने राजनयिकों को वापस बुलाने के कुछ ही घंटों बाद कनाडा ने भारत पर एक और गंभीर आरोप लगाया है। ऐसे लग रहा है कि कनाडा के पीएम भारत के साथ बिल्कुल संबंध को बिगाड़ने पर ही तुल गए हैं। ऐसे में विदेश नीति के जानकारों से लेकर आम लोगों को भी यह समझ नहीं आ रहा है कि आखिर जस्टिन ट्रूडो को हुआ क्या है। कनाडा की रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस का आरोप है कि भारत उनकी धरती पर 'गंभीर आपराधिक गतिविधि' में सीधे-सीधे शामिल है।

हालांकि कनाडा ने अपने दावों के समर्थन में किसी भी तरह का सबूत पेश नहीं किया है। कनाडा की पुलिस का आरोप है कि ओटावा में भारत सरकार के 'एजेंट' खालिस्तानी तत्वों को निशाना बनाने के लिए लॉरेंस बिश्नोई गैंग के साथ मिलकर काम कर रहे थे। खास बात है कि ये आरोप ऐसे समय में सामने आए हैं जब लॉरेंस बिश्नोई गिरोह मुंबई में एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या में कथित संलिप्तता के कारण भारत में कानून प्रवर्तन एजेंसियों की नजर में है।

दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा: योगी

सीएम ने रामगोपाल मिश्रा के परिवारवालों से की मुलाकात

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को बहराइच हिंसा के पीड़ित परिवार से मुलाकात की। यह

मुलाकात लखनऊ में मुख्यमंत्री आवास पर हुई। इस मुलाकात के दौरान राम गोपाल के पिता, मां और पत्नी मौजूद थे। मुख्यमंत्री योगी ने इस मुलाकात की जानकारी तस्वीर शेयर करके दी है। उन्होंने कहा कि दुख की इस घड़ी में उत्तर प्रदेश सरकार पूरी संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता से पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लिखा, 'जनपद बहराइच की दुर्भाग्यपूर्ण घटना में काल-कवलित हुए युवक के शोक संतप्त परिजनों से आज लखनऊ में भेंट की। दुख की इस घड़ी में उत्तर प्रदेश सरकार पूरी संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता से पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। आश्वस्त रहें, पीड़ित परिवार को न्याय दिलाना यूपी सरकार की शीर्ष प्राथमिकता है। इस घोर निंदनीय और अक्षम्य घटना के दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। सीएम योगी से मुलाकात के दौरान राम गोपाल मिश्रा के पिता कैलाश नाथ रो पड़े। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा कि सब बर्बाद हो गया है। इससे पहले राम गोपाल मिश्रा के पिता कैलाश मिश्रा ने समाचार न्यूज एजेंसी से कहा कि मेरे बेटे की हत्या कर दी गई है। मैं चाहता हूं कि दोषियों को सजा मिले। उन्होंने मेरे परिवार को बर्बाद कर दिया है। उन्हें इसके लिए सजा मिलनी चाहिए।

अयोध्या में एयर इंडिया के विमान में बम की सूचना

- जयपुर से 139 यात्रियों को लेकर आ रहा था विमान, बम स्क्वायड ने 2.30 घंटे तक की चेकिंग

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या से बड़ी खबर है। एयरपोर्ट पर लैंड होने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट में बम होने की सूचना के बाद सर्च ऑपरेशन चल रहा है। फ्लाइट में 139 यात्री सवार थे, उन्हें सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। एयरपोर्ट अथॉरिटी के मुताबिक, जयपुर से उड़ान भरने के बाद 1 मैसेज मिला कि विमान में बम है। अयोध्या में लैंड होने के

बाद सीआई एसएफ के जवानों ने फ्लाइट को अपने कब्जे में ले लिया। इस वक्त फ्लाइट के अंदर चेकिंग चल रही है। अचानक सीआईएसएफ के जवानों ने इस फ्लाइट को घेर लिया। कुछ जवान अंदर आए और फिर हमें कतार में नीचे उतारा गया। हमारा सामान फ्लाइट के अंदर ही छोड़ दिया गया। हमें करीब 200 मीटर की दूरी पर लाकर हवाई पट्टी पर ही बैठा दिया गया। लोग टर्मिनल की तरफ जाना चाहते थे।

बिना कर्मचारी यहां चलेगा देश का पहला टोल प्लाजा

- शुरू होने वाला है नया हाईवे, तीन राज्यों का सफर होगा आसान
- हरियाणा के झिंझौली में शुरू हो रहा पहला बिना बूथ टोल प्लाजा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में जल्द देश का पहला बिना बूथ के टोल प्लाजा शुरू होने जा रहा है। एनएचएआई ने इसके लिए टोल की दरें भी तय कर दी हैं। झिंझौली में बनने वाले इस टोल प्लाजा में टोल कलेक्शन करने की पूरा प्रोसेस ऑटोमेटिक होगा। यहां सोनीपत से लेकर बवाना तक के 29 किमी के सफर को पूरा करने के लिए 65 रुपये चुकाने होंगे। इस टोल पर ऐसे सेंसर लगाए जा रहे हैं जो फास्टैग से खुद ही टोल काट लेंगे। इसका ट्रायल रन भी हो चुका है। इस टोल के शुरू होने से दिल्ली, हरियाणा और पंजाब का सफर आसान हो जाएगा। नया हाईवे बनने से सोनीपत से बवाना तक का सफर एक एक घंटा से घटकर सिर्फ 20 मिनट का रह जाएगा। वहीं आईजीआई का सफर घटकर एक घंटे से भी कम हो जाएगा। इतना ही नहीं इस हाईवे के शुरू होने के बाद दिल्ली-अमृतसर एन-44 पर ट्रैफिक का दबाव भी कम हो जाएगा। इस रास्ते से जाने वाले हाईवे पर कार, जीप और वैन के लिए 65 रुपये चुकाने होंगे। वहीं मिनी बस, हल्के व्यावसायिक वाहनों के लिए 105 रुपये चुकाने होंगे।

भारत ने अमेरिका के साथ की 31 प्रीडेटर ड्रोन की डील

32 हजार करोड़ की डील फाइनल, तीनों सेनाओं को मिलेंगे; देश में ही बनेगी मेंटेनेंस फैसिलिटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के दुश्मनों की नींद उड़ी हुई है। भारत ने अमेरिका के साथ एक ऐसी डील की है, जिससे चीन और पाकिस्तान की भी टेंशन बढ़ गई है। भारत ने अमेरिका के साथ 34 हजार करोड़ रुपये की प्रीडेटर ड्रोन्स की डील की है। अमेरिका भारत को 31- एमक्यू प्रीडेटर ड्रोन्स सप्लाई करेगा। इस डील की कुल कीमत 34,500 करोड़ रुपये है। तीनों सेनाओं को अलग-अलग संख्या में ड्रोन्स मिलेगी। वहीं इस डील की सबसे अहम बात यह है कि भारत में ड्रोन्स के मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरऑल के लिए भी फैसिलिटी बनाई जाएगी।

इसी साल के जून महीने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका दौरे पर गए थे। इस दौरान ही उन्होंने अमेरिका को 31 हाई एल्टीट्यूड लॉन्ग एंडोरेंस ड्रोन्स का प्रस्ताव दिया था। एमक्यू 9 बी हंटर किलर ड्रोन अधिक ऊंचाई पर उड़ सकता है और इसे रीपर भी बुलाते हैं। अमेरिका से जो ड्रोन भारत को मिलेंगे, उन्हें तीनों सेनाओं में बांटा जाएगा।

इन ड्रोन्स को विशेष तौर पर चार जगह पर तैनात किया जाएगा। चेन्नई में आईएनएस राजाली और गुजरात के पोरबंदर में इसका संचालन भारतीय नौसेना करेगी। तो वहीं गोरखपुर और सरसावा एयर फोर्स बेस पर वायु सेना और आर्मी इसका संचालन करेगी। गोरखपुर और सरसावा बेस पर इसलिए ड्रोन को तैनात किया जाएगा, ताकि चीन के लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल की निगरानी रखनी आसान हो जाए। इसके अलावा लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में भी इसके जरिए निगरानी रखा जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

वन मंत्री श्री रावत ने 30 लाख रुपये लागत की 2 सड़कों का किया भूमि-पूजन

भोपाल। वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री रामनिवास रावत ने विजयपुर क्षेत्र में ग्राम खाड़ी से गिलाई माता तथा सिलपुरा से थूवरनाला तक 30 लाख 92 हजार 426 रुपये लागत की 2 सड़कों का भूमि-पूजन किया। वन मंत्री श्री रावत ने बताया कि ग्रामीणों द्वारा इन सड़कों की माँग लम्बे समय से की जा रही थी। उन्होंने कहा कि इन सड़कों के निर्माण से ग्रामीणों का आवागमन सुगम होगा। ये सड़कें क्षेत्र के विकास के लिये सहायक होंगी। श्री रावत ने बताया कि इन सड़कों का निर्माण तेन्दूपत्ता मद से अधोसंरचनात्मक विकास कार्य के तहत वन विभाग द्वारा करवाया जायेगा। भूमि-पूजन कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणजनों ने वन मंत्री श्री रावत का स्वागत किया। इस अवसर पर वन विभाग के अधिकारी एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

सीएम हेल्पलाइन पोर्टल में प्राप्त शिकायतों के निराकरण में ऊर्जा विभाग नबंर-1

भोपाल। लोक सेवा प्रबंधन विभाग द्वारा सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निराकरण की स्थिति के आधार पर जारी ग्रेडिंग में ऊर्जा विभाग लगातार प्रथम स्थान पर बना हुआ है। ऊर्जा विभाग 52 विभागों की जारी ग्रेडिंग में जून 2023 से अगस्त 2024 तक लगातार प्रथम स्थान पर है। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने विभागीय अधिकारियों द्वारा शिकायतों के निराकरण में तत्परता से की गई कार्यवाही पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा है कि आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि अधिकारी आगे भी बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं का इसी तरह से त्वरित निराकरण करते रहेंगे। सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर ऊर्जा विभाग से संबंधित शिकायतों के निराकरण के लिये एल-1 अधिकारी के रूप में कनिष्ठ अभियंता/सहायक अभियंता, एल-2 अधिकारी के रूप में कार्यपालन अभियंता, एल-3 अधिकारी के रूप में अधीक्षण अभियंता एवं एल-4 अधिकारी के रूप में मुख्य अभियंता सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर दर्ज हैं। प्रत्येक स्तर पर शिकायत के निराकरण के लिये 7 दिन का समय निर्धारित किया गया है। शिकायतों के निराकरण के बाद सीएम हेल्पलाइन कॉल-सेंटर द्वारा शिकायतकर्ता से दूरभाष पर निराकरण के संबंध में संतोषजनक जवाब प्राप्त करने के बाद ही शिकायतों को बंद किया जाता है। गौरतलब है कि राज्य शासन द्वारा नागरिकों को दी जा रही विभिन्न सेवाओं के संबंध में प्राप्त शिकायतों के निराकरण की पुख्ता व्यवस्था के लिये लोक सेवा प्रबंधन विभाग द्वारा सीएम हेल्पलाइन पोर्टल का निर्माण वर्ष 2014 में किया गया है। इस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों को विभाग के संबंधित अधिकारियों को अग्रेषित किया जाता है।

प्रदेश के 53 ई.एफ.ए. स्कूलों में कम्प्यूटर प्रयोग शालाएं

भोपाल। मध्यप्रदेश राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रदेश के 53 एजुकेशन फॉर ऑल (ई.एफ.ए.) स्कूलों में कम्प्यूटर प्रयोग शालाएं आधुनिकतम एवं इंटरनेट फेसिलिटि सहित स्थापित की गई हैं। विद्यार्थियों को इन प्रयोगशालाओं के माध्यम से कम्प्यूटर से जुड़ी तकनीकों की जानकारी दी जा रही है। कम्प्यूटर प्रयोग शालाओं में न्यूनतम 40 से लेकर 100 कम्प्यूटर तक लगाये गये हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में डिजिटल प्रौद्योगिकी के जरूरतों को ध्यान में रखते हुए स्कूलों में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरणों की उपलब्धता की सिफारिश की गई है। इन प्रयोगशालाओं का उपयोग विद्यार्थी स्कूल के समय के दौरान इस तकनीक को सीखने का प्रयास कर रहे हैं। इन प्रयोगशालाओं का लाभ जन-सामान्य को भी सशुल्क सुविधा के साथ उपलब्ध कराया जा रहा है। कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं के माध्यम से विभिन्न ऑनलाइन परीक्षाएं एवं प्रशिक्षणों का आयोजन भी किया जा रहा है। इन प्रयोगशालाओं में शिक्षकों को डिजिटल तरीके से पावर पाइंट प्रेजेन्टेशन देने का प्रशिक्षण भी दिलाया गया है। छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री, जिसमें विगत वर्षों के प्रश्न-पत्र और अन्य जानकारी ओपन बोर्ड की वेबसाइट पर अपलोड की गई है। ओपन स्कूल की कक्षा 10वीं में 11 और कक्षा 12वीं के पाठ्यक्रम में 18 विषय शामिल हैं। स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड और माइक्रोसॉफ्ट ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शिक्षा के संबंध में एमओयू किया है। माइक्रोसॉफ्ट प्रशिक्षण मॉडयूल्य उपलब्ध कराते हुए ई.एफ.ए. स्कूलों में प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रहा है। प्रदेश के 53 चयनित शासकीय ईएफए स्कूलों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकी सिखाने में सहायक हो रहा है। यह पाठ्यक्रम एक विषय के रूप में 8वीं से 12वीं तक की कक्षाओं में प्रारंभ किया गया है। इसकी कुल अवधि 240 घंटे है। पिछले वर्ष कक्षा 8वीं में 619, कक्षा 9वीं में 1303 और कक्षा 10वीं में 995 विद्यार्थियों ने इस विषय में अध्ययन प्राप्त किया है।

बिजली, पानी और साफ-सफाई की पर्याप्त व्यवस्था रहे, श्रद्धालुओं की सुविधा का ध्यान रखे-राज्य मंत्री कृष्णा गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण और विमुक्त, घुमंतु और अर्ध-घुमंतु राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि अन्नकूट महोत्सव के अवसर पर गुफा मंदिर में बिजली, पानी, साफ-सफाई, पार्किंग सहित सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की जायें। राज्य मंत्री श्रीमती गौर गुफा मंदिर परिसर में अन्नकूट महोत्सव के आयोजन की तैयारियों के लिये संबंधित अधिकारियों की बैठक के दौरान निर्देश दिये। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि श्री रामानंद आश्रम गुफा मंदिर न्यास भोपाल में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी 2 नवंबर को आयोजित होने वाले अन्नकूट

महोत्सव की तैयारी में किसी भी तरह की कमी नहीं रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके लिये अधिकारी समय पर व्यवस्था करना सुनिश्चित करे। उन्होंने पेयजल, स्ट्रीट-लाइट, कचरे की ट्राली, सफाईकर्मी, डस्टबिन, बाउंड्री-वॉल की पुताई से लेकर बैरिकेट्स और ट्रैफिक पुलिस की पर्याप्त व्यवस्था के लिए अधिकारियों को निर्देश दिये। बैठक में गुफा मंदिर महंत श्री रामप्रवेश दास जी, आयुक्त नगर पालिक निगम भोपाल, डी.सी.पी जोन-3, एसडीएम बैरागढ़, सिविल सर्जन जयप्रकाश चिकित्सालय, नियंत्रक खाद एवं आपूर्ति विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

संजीवनी क्लीनिक से घर के नजदीक मिलेगा निःशुल्क इलाज - ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। काशी नरेश की गली किला गेट में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत निर्मित मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक का सोमवार को ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि संजीवनी क्लीनिक के माध्यम से सब को स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। सरकार हर व्यक्ति को उसके घर के नजदीक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिये कटिबद्ध है। इसी उद्देश्य से संजीवनी क्लीनिक खोले जा रहे हैं। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि गरीब एवं जरूरतमंद को घर के नजदीक ही निःशुल्क स्वास्थ्य लाभ मिले, इसी धारणा से सरकार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वार्ड में संजीवनी क्लीनिक खोले जा रहे हैं, जहां दवाईयों के साथ ही कई प्रकार की स्वास्थ्य जाचों का लाभ निशुल्क मिलेगा। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं क्षेत्रीण गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

41वीं नेहरू सब जूनियर हॉकी टूर्नामेन्ट नई दिल्ली में

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। 41वीं नेहरू सब जूनियर हॉकी टूर्नामेन्ट का आयोजन शिवाजी 4 अक्टूबर से 14 अक्टूबर स्टेडियम नई दिल्ली में किया गया। प्रतियोगिता में खेल अकादमी के हॉकी खिलाड़ियों ने खेल का शानदार प्रदर्शन कर उपविजेता का खिताब अपने नाम किया। दिल्ली के शिवाजी स्टेडियम में आयोजित इस हॉकी टूर्नामेन्ट में खेल अकादमी के खिलाड़ियों ने बेहतर खेल प्रदर्शन करते हुये फायनल में प्रवेश किया था। टूर्नामेन्ट का फायनल मुकाबला म.प्र. राज्य हॉकी अकादमी भोपाल और नवल टाटा हॉकी अकादमी जमशेदपुर के मध्य खेला गया। टूर्नामेन्ट में म.प्र. राज्य हॉकी

अकादमी भोपाल की टीम नवल टाटा जमशेदपुर से 5-1 से परास्त होकर उप विजेता बनी।

खेल मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने खेल अकादमी के हॉकी टीम की उनकी अर्जित इस खेल उपलब्धि की सराहना करते हुये बधाई दी है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली के शिवाजी स्टेडियम में आयोजित इस हॉकी टूर्नामेन्ट में देश भर की 28 ख्याति प्राप्त टीमों ने प्रतिभागिता की थी। टूर्नामेन्ट में उप विजेता रही म.प्र. राज्य पुरूष हॉकी अकादमी के खिलाड़ी मुख्य प्रशिक्षक श्री समीरदार और प्रशिक्षक श्री लोकेन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में प्रशिक्षणरत् है।

गांधीसागर फॉरेस्ट रिट्रीट रोमांच, मनोरंजन और सांस्कृतिक अनुभवों का एक अद्भुत संगम - प्रमुख सचिव श्री शुक्ला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्राकृतिक सौंदर्य के बीच रोमांचक और साहसिक अनुभव का संगम गांधीसागर फॉरेस्ट रिट्रीट के तीसरे संस्करण की शुरुआत मंदसौर में हुई। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति और प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड, श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि मंदसौर में गांधीसागर के बैकवाटर्स किनारे स्थापित गांधीसागर फॉरेस्ट रिट्रीट रोमांच, मनोरंजन और सांस्कृतिक अनुभवों का एक अद्भुत संगम होने के साथ साथ, उभरता हुआ स्लृष्टश्व और वेडिंग डेस्टिनेशन भी है। ऑल वेदर टेंट सिटी में लग्जूरियस स्टे के साथ पर्यटक कई रोमांचक गतिविधियों जैसे

हॉट एयर बैलूनिंग, पैरामोटरिंग, जेट स्कीइंग, कयाकिंग, मोटर बोटिंग का आनंद ले सकेंगे। गांधीसगर फॉरेस्ट रिट्रीट की शुरुआत रंगारंग लोकगीत लोकनृत्य के साथ हुई। कार्यक्रम के अंत में नयासा म्यूजिक बैंड की परफॉर्मेंस भी हुई। अपने अनोखे और अद्वितीय स्वरूप में गांधी सागर अब वेडिंग और डेस्टिनेशन के रूप में पहचान बना रहा है। पर्यटकों के लिए प्राकृतिक सौन्दर्य, रोमांचक गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का यह बेमिसाल संयोजन है। इच्छुक पर्यटक 07808780899 पर संपर्क कर बुकिंग संबंधी डिटेल्स जान सकते है। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश पर्यटन द्वारा नए टूरिज्म उत्पाद ऑफबीट डेस्टिनेशन के रूप में विकसित और प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

स्ट्रॉबेरी की फसल ने किसान बाबूलाल पाटीदार की आर्थिक स्थिति को किया मजबूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। धार जिले में उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा देने के लिये एकीकृत बागवानी विकास मिशन के तहत किसानों को उद्यानिकी फसलों की तरफ प्रेरित किये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस मिशन के माध्यम से धार जिले के बदनावर के ग्राम तिलगारा के किसान श्री बाबूलाल पाटीदार की आर्थिक स्थिति में प्रगतिशील बदलाव आया है। किसान श्री बाबूलाल पाटीदार वर्षों से अपने खेतों में पारम्परिक खेती कर सोयाबीन और गेहूँ की फसल लिया करते थे। मेहनत के मुकाबले उन्हें खेती में मुनाफा नहीं हो पाता था। उन्होंने इस बात को लेकर उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों से सम्पर्क किया। अधिकारियों ने उनके खेत के परीक्षण के बाद स्ट्रॉबेरी की फसल लेने की सलाह दी। किसान श्री बाबूलाल को एकीकृत बागवानी विकास मिशन में मिलने वाले लाभों की जानकारी भी दी गई। उन्होंने विभागीय अधिकारियों के मार्गदर्शन में एक हेक्टेयर क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की फसल लगाई। किसान श्री बाबूलाल ने स्ट्रॉबेरी की खेती के दौरान मल्चिंग तथा ड्रिप पद्धति का उपयोग किया और अधिकारियों के मार्गदर्शन में खाद का उपयोग भी किया। किसान श्री बाबूलाल ने 180 क्विंटल स्ट्रॉबेरी की फसल ली। स्ट्रॉबेरी की फसल बेचकर उन्हें 2 लाख रुपये से अधिक का मुनाफा हुआ। श्री बाबूलाल पाटीदार बताते हैं कि उन्होंने स्ट्रॉबेरी को जयपुर, भोपाल और इंदौर मण्डी में विक्रय किया। कई खरीददार तो हमारे खेत से ही स्ट्रॉबेरी ले गये। उन्होंने बताया कि पहली बार तो वे स्ट्रॉबेरी के पौधे खरीदकर लाये थे, लेकिन इस वर्ष तो मदर प्लांट से पौधे तैयार कर लिये गये हैं। किसान श्री बाबूलाल बताते हैं कि खेती को वैज्ञानिक पद्धति से किया जाये तो कृषि उपज से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने राजकुमार हिरानी को दिया राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुर्नवास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने 13 अक्टूबर को सुप्रसिद्ध पटकथा लेखक और निर्माता-निर्देशक श्री राजकुमार हिरानी को %राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान% (वर्ष 2023) से अलंकृत किया। प्रथम राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान वर्ष 1997 में फिल्म निर्देशक श्री हृषिकेश मुखर्जी को दिया गया था। 27वां किशोर सम्मान पटकथा लेखक श्री राजकुमार हिरानी को दिया गया है। समारोह में स्व. किशोर कुमार के यादगार गीतों की प्रस्तुति मुम्बई से आये मशहूर गायक श्री नीरज श्रीधर एवं उनकी टीम द्वारा दी गई। कार्यक्रम में जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि स्व. किशोर कुमार एक होनहार व कुशल गायक थे। उनके गीतों से फिल्म संगीत को एक नई दिशा, एक नया आयाम मिला। वे हमेशा कहते थे कि दूध जलेबी खायेंगे, खण्डवा में बस जायेंगे। पटकथा लेखक श्री राजकुमार हिरानी ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान के लिए मध्यप्रदेश सरकार को साधुवाद दिया। बचपन से ही स्व. किशोर कुमार उनके पसंदीदा गायक रहे है, आज उनके नाम का राष्ट्रीय सम्मान पाकर वे खुद को बेहद गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

संस्कृति संचालक श्री एन.पी. नामदेव ने श्री हिरानी के लिए प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया और बताया कि श्री हिरानी को प्रमुख रूप से मुन्ना भाई एमबीबीएस (2003), लगे रहो मुन्ना भाई (2006) और श्री इडियट्स (2009) जैसी मनोरंजक फिल्मों के लिए जाना जाता है। खंडवा के पुलिस परेड ग्राउण्ड में हुए राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान कार्यक्रम में खण्डवा की विधायिका श्रीमती कंचन तनवे, महापौर श्रीमती अमृता यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पिंकी वानखेड़े सहित बड़ी संख्या में जन-प्रतिनिधि व अधिकारी एवं संगीतप्रेमी उपस्थित थे।

अचानक हॉकफोर्स कैम्प पहुंचे डी.जी.पी.

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा नक्सलवाद के विरुद्ध जीरो टॉलरेन्स नीति के तहत नक्सल समस्या को समूल नष्ट करने लिए समय समय पर मार्गदर्शन दिया जा रहा है। इसी तारतम्य में मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में नक्सल विरोधी अभियान को गति देने के लिए पुलिस महानिदेशक मध्यप्रदेश श्री सुधीर कुमार सक्सेना ने जिले का दो दिवसीय भ्रमण किया। 12 अक्टूबर की रात को डी.जी.पी भोपाल से गोंदिया पहुंचे जहां से लगभग डेढ़ घंटे चलकर मुरकुटडोह ज्वाइंट टॉस्क फोर्स कैम्प का भ्रमण किया। ऑपरेशनल कारणों से इस दौरे को पूर्णत: गोपनीय रखा गया था। मध्यप्रदेश-महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ के ट्रायजंक्शन सीमा क्षेत्र में स्थापित मुरकुटडोह सुरक्षा कैम्प महाराष्ट्र के गोंदिया

जिले में है। इस कैंप में महाराष्ट्र पुलिस की ष्ट-60 फोर्स, छत्तीसगढ़ की ष्ठत्रन्न फोर्स एवं मध्यप्रदेश की हॉक फोर्स तैनात है।

इस कैंप का निर्माण अबूझमाड से आने वाले नक्सलियों को रोकने के लिए किया गया है। भ्रमण के दौरान उन्होंने समन्वय एवं संयुक्त अभियानों की समीक्षा की तथा उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन दिया। सभी जवानों से सामूहिक तथा व्यक्तिगत चर्चा कर उनके द्वारा किये जा रहे नक्सल विरोधी अभियानों तथा समस्याओ के बारे में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने विषम परिस्थितियों में रहकर भी साहस तथा समर्पण के साथ कार्य करने वाले इन जवानों की प्रशंसा की तथा मनोबल बढाया। इसके बाद डी.जी.पी. ने बालाघाट जिले में स्थापित हॉकफोर्स कैम्प पितकोना, डाबरी, सोनगुड्डा, डोरा एवं सीआरपीएफ के कैम्प बिठली का औचक भ्रमण किया। जब डी.जी.पी. हॉक कैम्प पर पहुंचे वहां संतरी द्वारा सुरक्षा प्रोटोकाल के तहत उनसे परिचय पूछा एवं पासवर्ड बताने को कहा। जब तक पासवर्ड नही बताया गया तब तक कैम्प में डी.जी.पी. का प्रवेश नही हुआ। डी.जी.पी. द्वारा वहां पदस्थ जवानों को केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह तथा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश तथा भावनाओं से अवगत कराया एवं कहा की मुख्यमंत्री आपकी समस्याओं के निराकरण के लिए सदैव तत्पर रहते है एवं आपके द्वारा किये जा रहे प्रयासों की नियमित रुप से जानकारी लेते है। डी.जी.पी द्वारा जवानों से कहा कि आपके मनोबल में वृद्धि के लिये नवीन भत्ते तथा अभियानों में उल्लेखनीय कार्य करने पर क्रमपूर्व पदोन्नतियाँ की गई है।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी 170 आवेदकों की समस्याएं निराकरण के दिए निर्देश

विष्णु बहादुर सिंह को मिली ट्राइसाइकिल

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। नागरिकों के समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को जिला पंचायत सभागार में सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक जनसुनवाई आयोजित की जाती है। इस बार आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले के विभिन्न अंचलों से आए 170 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अनिराकृत आवेदनों के लिये समय-सीमा निर्धारित कर अधिकारियों को समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए गए हैं।

जनसुनवाई में जनपद पंचायत सिहावल के ग्राम अमिलिया से आये विष्णु बहादुर सिंह चंदेल ने अपने आवेदन पत्र के माध्यम से बताया कि लकवा के कारण वह चलने में असक्षम हैं। उन्हें घर में या कहीं भी आने-जाने के लिए सहारे की आवश्यकता पड़ती है। वह अपना काम स्वयं नहीं कर पाते हैं। उन्होने कहा कि यदि उन्हें ट्राई साइकिल प्राप्त हो जाये तो वे अपना कार्य किसी के सहारे के बिना भी स्वयं कर सकेगें और कही भी आने-जाने में कोई परेशानी नहीं होगी। उन्होंने बताया कि पहले एक बार ट्राई सायकिल प्राप्त हुई थी लेकिन अब वह चलने लायक नहीं थी। उक्त आवेदक की शारीरिक स्थिति को देखते हुए कलेक्टर ने सामाजिक न्याय विभाग द्वारा उन्हें सहायक उपकरण प्रदान कराए। अध्यक्ष जिला पंचायत मंजू सिंह द्वारा उन्हें ट्राइसाइकिल प्रदान की गई। आज समस्या का त्वरित निराकरण होने पर विष्णु बहादुर खुश और संतुष्ट दिखे।

इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

दबंगों ने महिला को कुल्हाड़ी मारी, 4 पर केस

महिला बोली- आरोपियों ने कपड़े फाड़े, छेड़छाड़ भी की

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर के कोतवाली थाना क्षेत्र में पशुओं को चरा रही महिला पर चार लोगों ने मिलकर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। महिला गंभीर रूप से घायल है। उसे 108 एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल में भर्ती कराया गए है।

बेला गांव में रहने वाली घायल महिला श्याम बाई राठौर ने बताया कि मंगलवार को वह अपने घर की गाय, भैंस, बकरी चराने गई थी, तभी राजन राठौर, भूपत राठौर, पूरन राठौर, कृष्णपाल उर्फ दादी राठौर ने हमला कर दिया। उसे इतना पीटा कि वह बेहोश हो गई। महिला ने आरोप लगाया कि उसके कपड़े फाड़ कर छेड़छाड़ की गई। कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद जैन ने बताया कि घायल महिला को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 4 आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। पीड़ित महिला ने लड़ाई की वजह पुरानी रंजिश बताई है।

ग्राम पंचायत फरहादी में आयोजित किया गया वित्तीय साक्षरता का कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर निप्र। जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत के फरहादी गांव में वित्तीय साक्षरता का कार्यक्रम किया गया जिसमें मुख्यतिथि राहुल रंजन ब्रांच मैनेजर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ब्रांच पचामा रहे वही विशिष्ट अतिथि के तौर पर संतोष कुमार मिश्रा जिला कोऑर्डिनेटर वित्तीय साक्षरता जिला रीवा, बलराम मिश्रा उपस्थित रहे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर बैंक मैनेजर श्रीरंजन ने कहा कि बैंक से संबंधित कई योजनाएं आप लोगों के लिए संचालित है इनका आप अधिक से अधिक लाभ ले जहां कहीं भी कोई परेशानी आए तो निश्चित होकर आप मुझे अवगत कराए उसका तुरंत निराकरण किया जाएगा। वही श्री मिश्रा जी ने कहा कि आप लोगों के खाते में जो पैसे आते हैं कुछ पैसे बचा कर रखें बचत करने की आदत डालें ताकि कोई समस्या आने पर आपके पास पैसे मौजूद रहे वर्तमान समय में कई तरह के फ्रांड चल रहे हैं उनसे आप लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है फोन में कोई भी गोपनील जानकारी शेयर ना करें वही कार्यक्रम पर उपस्थित अन्य ग्रामीण जन भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये कार्यक्रम में ही गांव की ग्रामीण महेश श्रीवास्तव लल्लू राम नारायण मिश्र सहित अन्य रहे मौजूद।

सरपंच सहित 50 लोगों ने ग्रामीणों को पीटा

लाठी-डंडों और कुल्हाड़ी से किया हमला, 14 लोग घायल, तीन की हालत गंभीर

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। पन्ना जिले के धरमपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत आने ग्राम भसूड़ा के बैरहा में मवेशी चराने को लेकर दो पक्षों में रविवार शाम को विवाद हो गया। देखते ही देखते यह विवाद इतना बढ़ गया कि एक पक्ष के सरपंच सहित 50 लोगों ने मवेशी चराने वाले ग्रामीणों और महिलाओं पर लाठी-डंडों और कुल्हाडी से ताबड़तोड़ हमला कर दिया।

इसमें 14 लोग घायल हो गए, जिनमें 3 की हालत गंभीर बनी हुई है। सोमवार को इन तीन गंभीर घायलों को तहसील के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इसके मंगलवार को उन्हें जिला अस्पताल रेफर किया जहां से मामला सामने आया है।

70 बीघा जमीन का विवाद: दरअसल ग्राम भसूड़ा, बैरहा में स्थित गोचर जमीन लगभग 70 बीघा पर बजरंगपुर टोला के किसान कई सालों से मवेशी चराते चले आ रहे हैं। इस जमीन पर सिंहपुर ग्राम पंचायत के सरंपच योगेन्द्र धुरिया उर्फ रसगुल्ला महाराज अवैध कब्जा करना चाहता है।

ट्रैक्टर चलाने से रोका तो किया हमला: 13 अक्टूबर 2024 को दबंगों के साथ सरपंच ने मौके पर पहुंचकर उक्त जमीन पर ट्रैक्टर से जुताई शुरू कर दी। इसके विरोध में गांव के अन्य आ गए। लोगों ने सरपंच को उक्त जमीन पर ट्रैक्टर चलवाने से मना किया। लेकिन सरपंच ने गांव वालों को पीटना शुरू कर दिया।

लाठी, डंडों और कुल्हाड़ी से गांव वालों पर हमला कर दिया। जिसमें 14 लोग घायल हो गए। इनमें महिलाएं भी शामिल हैं। जिन्हें खून से लथपथ हालत में प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय पन्ना रेफर किया गया है। जहां तीन की हालत नाजुक बताई जा रही है।

घायलों ने मंगलवार को अपनी आप बीती मीडिया को बताई। हालांकि उक्त मामले में घायलों की शिकायत पर धरमपुर थाने में एक दर्जन लोगों पर पुलिस ने विभिन्न धाराओं में मामला पंजीबद्ध कर लिया है। साथ ही मामले को विवेचना में लिया है।

पिकअप ने ऑटो को मारी टक्कर

बढ़ौरा में हादसा, 7 लोग घायल, पिकअप चालक फरार

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के ग्राम बढ़ौरा में मंगलवार की सुबह 11 बजे सीधी से रामपुर की ओर जा रही पिकअप ने ऑटो को टक्कर मार दी, जिससे ऑटो में सवार 7 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें 108 एम्बुलेंस से इलाज के लिए जिला अस्पताल सीधी में भर्ती कराया गया है। जहां सभी घायलों का अभी इलाज चल रहा है।

प्रत्यक्षदर्शी रामसेवक ने जानकारी देते हुए बताया है कि घायलों में सतेंद्र सिंह, रवींद्र कोल, कमला साहू है। इसके अलावा 4 अन्य की हालत खराब थी, जिसकी वजह से वो नाम नहीं बता पा रहे हैं। सभी को जिला अस्पताल भेज दिया गया है। अस्पताल में पदस्थ डॉक्टर वरुण ने बताया है कि घायलों में सभी लोग सुरक्षित हैं। सभी का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। अस्पताल चौकी को घटना के बारे में जानकारी दे दी गई है।

कोतमा जपं सीईओ और अकाउंटेंट पर भ्रष्टाचार के आरोप

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। कोतमा जनपद पंचायत के प्रभारी सीईओ लाल बहादुर वर्मा और लेखापाल (अकाउंटेंट) विष्णु गुप्ता के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए जनपद पंचायत के ही अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, 9 सदस्य और 9 सरपंच अनिश्चित काल के लिए आमरण अनशन पर बैठ गए हैं। जनपद अध्यक्ष जीवन सिंह ने कहा कि सीईओ और लेखापाल के तानाशाह रवैये, बजट पर मनमानी और विकास कार्यों की अनदेखी के कारण यह स्थिति बनी है। जब तक दोनों को हटाया नहीं जाएगा, तब तक हम यहां से नहीं हटेंगे।

जनपद अध्यक्ष ने कहा कि वर्ष 2015-16 से 2022-23 तक के सभी रिकॉर्ड जब्त कर जांच कराई जाए। दोनों ने जपं के बिना प्रस्ताव के ही नियम विरुद्ध कुर्सी, टेबल, पंखे, कूलर खरीदकर भ्रष्टचार किए हैं।

फर्जीवाड़े की शिकायत करने पर पीड़ित के साथ मारपीट

पूर्व प्रबंधक ने खाली चेक पर साइन लेकर निकाली राशि, कलेक्ट्रेट पहुंची शिकायत

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर जिले की सेवा सहकारी समिति बाजना के पूर्व समिति प्रबंधक पर एक युवक ने मारपीट का आरोप लगाया है। इसको लेकर युवक ने मंगलवार को जनसुनवाई के दौरान कलेक्टर को आवेदन पत्र सौंपा। पत्र में युवक ने बताया कि उसने पूर्व प्रबंधक के खिलाफ उसके खाते से अवैध तरीके से लोन लेकर पैसे निकालने की शिकायत की थी। जिसके बाद उसने युवक के पिता से मारपीट की।

दरअसल, आवेदक बलराम लोधी के पिता नोनेलाल लोधी समिति में सेल्समैन के पद पर पदस्थ है। उसने बताया कि मारपीट करने वाला आरोपी राजेश तिवारी सेवा सहकारी समिति बाजना का पूर्व प्रबंधक है, जो अगस्त 2024 तक पद पर था।

इस दौरान युवक के पिता ने समिति से 40 हजार का लोन लेने के लिए आवेदन किया था। जिस पर पूर्व प्रबंधक ने उनसे खाली चेक पर साइन करवा लिए और हमारे खाते पर 2 लाख 40 हजार रुपए का लोन ले लिया। लेकिन युवक के पिता को सिर्फ 40 हजार की राशि दी।

फर्जीवाड़े की शिकायत करने पर पूर्व प्रबंधक ने मारपीट की: युवक ने बताया कि इसका पता उसके पिता को तब चला जब प्रबंधक के पद पर इशिका जैन की नियुक्ति हुई और उन्होंने बकायदारों को नोटिस जारी किया। जिसका नोटिस सेल्समैन पिता लोगों को देने पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उनके नाम रिकॉर्ड में 2.41 लाख रुपए ऋण दर्ज है और इसका नोटिस आया है। जिसके बाद उसके पिता ने पूर्व प्रबंधक तिवारी के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई। इस पर पूर्व प्रबंधक तिवारी भड़क गया और उसने नोनेलाल के साथ मारपीट कर दी।

शिकायत के बाद भी नहीं हुई कार्रवाई: युवक ने बताया कि तिवारी ने उसके पिता के अलावा भी कई लोगों के साथ धोखाधड़ी की है और खाली चेक में साइन करवाकर ज्यादा का लोन लिया है। इसकी शिकायत वो कई बार जनसुनवाई में डीएम से कर चुका है, लेकिन पूर्व प्रबंधक पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

इन लोगों के साथ भी हुआ फर्जीवाड़ा: युवक बलराम लोधी ने आरोप लगाया कि हीरा अहिरवार ने समिति से 1.40 लाख रुपए का लोन लिया था, लेकिन रिकार्ड में उसके नाम पर 3,13,400 रुपए का लोन दर्ज है। पूरन आदिवासी ने 30 हजार रुपए का लोन लिया था, लेकिन उस पर 3,13,400 रुपए दर्ज है।

इसके साथ ही रामलाल आदिवासी, थैली आदिवासी, रज्जू आदिवासी और हल्लू आदिवासी ने 50 हजार का लोन लिया, लेकिन 1 लाख दर्ज है। वहीं, हरदास आदिवासी ने 10 हजार रुपए का लोन लिया था, लेकिन उसके खाते में एक लाख रुपए दर्ज है।

जांच के बाद होगी कार्रवाई: वहीं, मामले में बकस्वाहा तहसीलदार भरत पांडेय ने बताया कि इस मामले में एसडीएम के निर्देश पर जांच की जाएगी। फिलहाल उसे नोटिस दिया जा रहा है।

आजाद अध्यापक संघ का शिक्षा गुणवत्ता सम्मेलन कल

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। आजाद अध्यापक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष हरीश मिश्र ने बताया कि प्रांताध्यक्ष भरत पटेल के आह्वान एवं नेतृत्व में लगातार संपन्न हो रहे जिला स्तरीय शिक्षा गुणवत्ता सम्मेलन के क्रम में 17 अक्टूबर को सतना में मध्यप्रदेश शासन की मंत्री प्रतिमा बागरी के मुख्य आतिथ्य एवं आजाद अध्यापक शिक्षक संघ मप्र के प्रांताध्यक्ष भरत पटेल की अध्यक्षता में सतना जिले के स्थानीय विंध्य गार्डेन में सुनियोजित है। जिसमें रीवा संभाग अंतर्गत सभी जिलों के ब्लाक जिला संभाग प्रांत के सभी पदाधिकारी एवं शिक्षक साथी शामिल होंगे। सम्मेलन में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की चर्चा के साथ साथ अध्यापक शिक्षक संवर्ग की समस्याओं एवं अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा होगी। जिला के सभी शिक्षक साथियों से सम्मेलन में शामिल होने की अपील की गई है।

कोतवाली पुलिस ने 23 हजार की नशीली कफ सिरप की जप्त, आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। कोतवाली पुलिस से मिली जानकारी के आधार पर 14 अक्टूबर 24 को मुखविर से सूचना मिली कि ग्राम रामपुर की एक महिला अपने घर में अवैध मादक पदार्थ कोरेक्स लेकर ग्राहको का इंतजार कर रही है। थाना प्रभारी कोतवाली द्वारा मुखविर सूचना से वरिष्ट अधिकारियों को अवगत कराया जाकर रेड की कार्यवाही हेतु एक टीम गठित कर मुखबिर के बताये स्थान पर भेजा गया। जहॉ एक महिला बैठी मिली जिसके घर एवं आसपास की तलाशी लेने पर घर के पीछे बाड़ी के पास एक सफेद रंग की बोरी मिली जिसे समक्ष गवाहों के खोलकर चेक किया गया जिसमे 127 शीशी नशीली कफसिरप कीमती 23,000 रूपये पाया गया।

जो उक्त संदेहिया आरोपिया से अवैध नशीली कफसिरफबिक्री करने के संबंध मे वैध दस्तावेज की मांग की गई जो नही होना बताई तथा अवैध नशीली कफसिरप के संबंध में पूछताछ करने पर अपना जुर्म स्वीकार करते हुए उक्त नशीली कफसिरप भास्कर पाण्डेय निवासी नूतन कॉलोनी सीधी से लाना बताई। आरोपिया से उक्त अबैध नशीली आनरेक्स कफ शीरप 127 नग कीमती 23000 रूपये की जप्त की जाकर आरोपिया का उक्त कृत्य धारा 5/13 मप्र ड्रग्स कंट्रोल अधिण् एवं 8/21, 22 एनडीपीएस एक्ट के तहत दण्डनीय पाये जाने पर अपराध कायम कर आरोपीगणों को गिरफ्तार कर प्रकरण को विवेचना में लिया गया है।

सांसद कजरी महोत्सव का करेंगे उद्घाटन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड भोपाल के सहयोग से मडिका कला एवं संस्कृति संस्थान और जिला प्रशासन के सहयोग से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान एक पेड़ मां के नाम के तहत आगामी 17, 18 अक्टूबर को दो दिवसीय कजरी महोत्सव का आयोजन उत्कृष्ट विद्यालय के मैदान में किया जा रहा है। 17 अक्टूबर को उत्कृष्ट विद्यालय के मैदान में शाम 6 बजे से लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ राजेश मिश्रा बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे।

मिलावटी मिठाइयों एवं अन्य खाद्य सामग्रियों की जांच के निर्देश जारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। त्यौहारों के दौरान दुकानदारों द्वारा मिलावटी मिठाइयों एवं अन्य खाद्य सामग्रियों की बिक्री की जाती है, जिसको खाने से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त स्थिति को दृष्टिगत रखते हुये अपर जिला दण्डाधिकारी द्वारा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देशित किया गया है कि जांच दल गठित कर जिला अंतर्गत समस्त दुकानों एवं प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण कर उपलब्ध समस्त खाद्य सामग्रियों की सैम्पलिंग की जावे एवं जॉच पश्चात दोषी पाये जाने वाले संचालकों पर आवश्यक कार्यवाही करते हुये प्रतिवेदन कार्यालय कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी अधिकारी जिला सीधी (म.प्र.) को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

रीजनल इण्डस्ट्रीज कान्क्लेव के संबंध में बैठक 16 अक्टूबर को

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र सीधी ने जानकारी देकर बताया है कि 23 अक्टूबर 2024 ''रीजनल इण्डस्ट्रीज कान्क्लेव'' के आयोजन जिला मुख्यालय रीवा में किया जाना प्रस्तावित है। सीधी जिले के उद्यमियों एवं निवेशकों की उपरोक्त आयोजन में सहभागिता सुनिश्चित करने एवं जिला स्तर पर एमएसएमई इकाईयों की अपेक्षाओं एवं समस्याओं पर चर्चा के लिए कलेक्टर की अध्यक्षता में 16 अक्टूबर 2024 को समय 11 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक का अयोजन किया गया है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से बैठक में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

शौच के लिए गए किशोर की करंट लगने से मौत, पुलिस ने दर्ज किया केस

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल के उमरिया गांव में मंगलवार सुबह जंगली जानवरों के शिकार के लिए बिछाए गए करंट की चपेट में आने से एक शख्स की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि गुलाब रैदास (17) अपने दोस्त के साथ जंगल में शौच करने गया था। इस दौरान उसे करंट लग गया। जिसके बाद उसके साथ गए दूसरे युवक ने चिल्लाना शुरू किया। शोर सुनकर आसपास के लोग वहां पहुंचे और गुलाब को अस्पताल ले गए, लेकिन इलाज के दौरान उसकी की मौत हो गई।

पुलिस ने दर्ज किया केस: गुलाब की मौत के बाद वन विभाग को जानकारी मिली कि जंगली जानवरों को फंसाने के लिए जंगल में करंट बिछाया गया था। हालांकि पुलिस ने इस मामले में गोकुल अहिरवार नाम के युवक पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सोहगी कॉलेज ऑफ एजूकेशन

एन.एच.-30 खटिया, सोहगी, रीवा मध्य प्रदेश पिन 486 226

कॉलेज कोड - 28 के अंतर्गत आवश्यकता हैं

1. व्याख्याता - शिक्षा
2. सहायक प्रध्यापक-

रसायन शास्त्र, भूगोल, संस्कृत, गृह विज्ञान, बायोटेक, अंग्रेजी

योग्यता, वेतन एवं सेवा शर्ते मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग, यू.जी.सी. एवं अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के नियमानुसार, समस्त अंक पत्र, प्रमाण पत्र व फोटो के साथ दो प्रतियों में कॉलेज के पते पर विज्ञापन की तिथि से 21 दिन के अंदर आवेदन करें।

अध्यक्ष
शासी निकाय
दूरभाष - 7024275507, 9630344816

विचार

देश के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और संघीय ढांचे को खतरा

आजादी के बाद देश के सामने आई कई कठिनाइयों और कमजोरियों के बावजूद भारत में धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक परंपराओं को कायम रखा जा रहा है। इन्हीं परंपराओं का आशीर्वाद है कि बहुधार्मिक, बहुजातीय, विविध संस्कृति, भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने वाले लोगों का हमारा देश आज भी एकजुट है और अपनी रक्षा के मामले में कई देशों से अधिक सक्षम है। हमारी तुलना में, पाकिस्तान की धर्म-आधारित गैर-लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था, जिसने गरीब लोगों को भुखमरी के कगार पर छोड़ दिया है, हमारे लिए सीखने के लिए एक बड़ा सबक है। हालांकि, बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उपर्युक्त महान परम्पराओं के कारण ही भारत आज जिस उच्च स्थान पर पहुंचा है, आज उसकी नींव को कमजोर करने की तैयारी हो चुकी है। देश के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और संघीय ढांचे को उन ताकतों से बहुत खतरा है जो भारत को धर्म आधारित, कट्टरपंथी-पिछड़ा देश बनाकर तीव्र जाति-पाति और लैंगिक भेदभाव वाली अलोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। एक खास तरह के संगठन और उससे जुड़े संगठनों के नेता आए दिन अपने ही देशवासियों के लिए काल्पनिक खतरा पैदा कर बहुसंख्यक धार्मिक समुदाय को अपनी रक्षा के लिए हथियार उठाने के लिए उकसाते हैं। ये बदनाम समूह एक विशेष धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय को देशद्रोही, आतंकवादी, उग्रवादी, घुसपैठिया, भारतीय संस्कृति का दुश्मन और अन्य बातें बोलकर समाज की नजरों में नफरत का पात्र बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी शासन व्यवस्था तभी मजबूत रह सकती है जब प्रत्येक नागरिक को सरकार से असहमत होने का अधिकार हो तथा लिखने, बोलने एवं अन्य माध्यमों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो। साथ ही कानून एवं व्यवस्था की मशीनरी को सरकार के दबाव एवं हस्तक्षेप से मुक्त होकर अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों को निर्भीक होकर पूरा करना होगा। इसके अलावा, प्रत्येक संस्था और सरकारी पद पर बैठा कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, संविधान के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। ऐसे ढांचे में, लोगों के राज्य का चौथे स्तंभ, यानी 'प्रिंटिंग और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया' की स्वतंत्रता और निष्पक्षता जरूरी है। यह बहुत जरूरी है कि सोशल मीडिया को भी इसी भावना से संचालित किया जाना चाहिए। यदि किसी भी लोक राज्य संरचना में लोगों के दिल और दिमाग सभी प्रकार के नाजायज दबाव और प्रतिशोध से मुक्त नहीं हैं, तो लोकतंत्र की वास्तविक अवधारणा गायब हो जाती है। इन सबके अलावा, लोकतांत्रिक व्यवस्था में समय-समय पर विभिन्न स्तरों पर चुनाव कराना भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है ताकि देश के सभी नागरिक बिना किसी लालच, भय, दबाव और भेदभाव के अपने विवेक के अनुसार मतदान कर सकें। तदनुसार, वे अपने वोट के अधिकार का उपयोग करके अपनी पसंद की सरकार या प्रतिनिधि चुन सकते हैं। इसके लिए देश के संविधान में आवश्यक कानून भी है और प्रक्रिया भी दर्ज है। चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी तरीके से संचालित करते हुए देश की नींव को बनाए रखना और मजबूत करना चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है।

किसान आंदोलन के नाम पर हुए बवाल का जो सच सामने आया है उससे देश को सतर्क हो जाना चाहिए

नीरज कुमार दुबे

देश ने हाल के कुछ वर्षों में कई आंदोलन देखे। सबसे पहले जन लोकपाल के लिए आंदोलन हुआ। इस आंदोलन को मिले समर्थन के बलबूते अरविंद केजरीवाल साा की सीढ़ियां चढ़ कर अपनी मंजिल पर पहुँच गये लेकिन दिल्ली में जन लोकपाल नहीं बनाया। देश ने दिल्ली में हरियाणा के कुछ पहलवानों का आंदोलन भी देखा। यह पहलवान राजनीति के अखाड़े में कूदने के लिए उसी खेल को नुकसान पहुँचाते रहे जिसकी बदौलत उन्होंने दौलत और शोहरत कमाई। देश ने किसान आंदोलन भी देखा। किसानों के कल्याण और उनके बेहतर भविष्य के लिए मोदी सरकार जो तीन कानून लेकर आई उसके बारे में भ्रम फैला कर देशभर में किसानों का आंदोलन खड़ा कर दिया गया जिसके चलते सरकार को तीनों कृषि कानून वापस लेने पड़े।

खुद को किसान कहने वाले आंदोलनकारियों ने कानून व्यवस्था का भी खूब मजाक बनाया और सरकार को झुकाने का अभियान सफलतापूर्वक चलाकर दिखाया। मगर अब इस किसान आंदोलन का सच एक प्रमुख आंदोलनकारी ने ही देश के सामने रख दिया है। हम आपको बता दें कि भारतीय किसान यूनियन के चढ़ूनी गुट के अध्यक्ष गुरनाम सिंह चढ़ूनी ने कहा है कि किसानों ने हरियाणा में कांग्रेस पार्टी के पक्ष में माहौल बनाया था। मीडिया में छपी खबरों के मुताबिक गुरनाम सिंह चढ़ूनी ने कहा है कि किसानों ने हरियाणा में कांग्रेस के पक्ष में माहौल बनाया था, लेकिन पार्टी ने सब कुछ वरिष्ठ नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर छोड़ दिया था। संयुक्त संघर्ष पार्टी के संस्थापक चढ़ूनी ने विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की हार का सबसे बड़ा कारण यही बताया है। चढ़ूनी के बयान पर सियासत भी शुरू हो गयी है और भाजपा ने कांग्रेस से इस मुद्दे पर स्पष्टीकरण की मांग भी की है। जाहिर है कांग्रेस चढ़ूनी के बयान से किनारा ही करेगी लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि किसानों के नाम पर खड़ा किया गया आंदोलन पूरी तरह राजनीतिक था और इसका एकमात्र मकसद मोदी सरकार को सत्ता से बाहर करना था। समय-समय पर इस आंदोलन से जुड़े तमाम सच सामने आते ही रहे हैं। टूलकिट गैंग के सदस्यों ने भोले भाले किसानों को बरगला कर अपने राजनीतिक हित तो साध लिये मगर अन्नदाता का नुकसान करवा दिया। आम किसानों का कैसे अपने राजनीतिक हितों के लिए इन तथाकथित किसान नेताओं ने दुरुपयोग किया यह हमने लोकसभा चुनावों के दौरान भी देखा था। तीनों कृषि कानून काफी पहले ही यानि साल 2022 के अंत में ही वापस लिये जा चुके थे लेकिन उसके बावजूद 2024 के लोकसभा चुनावों के दौरान पंजाब में भाजपा के सभी उम्मीदवारों के घर के बाहर बड़ी संख्या में किसानों को धरने पर बैठा दिया गया था। पंजाब में चुनाव प्रचार की कवरेज के दौरान जब मैंने संगरूर, लुधियाना, अमृतसर, पटियाला आदि क्षेत्रों में धरने पर बैठे लोगों से पूछा कि आपकी मांगें क्या हैं तो सबका जवाब एक ही था कि सारी समस्याओं के हल तक हम यहां से नहीं हटेंगे। जब मैंने पूछा कि समस्याएं क्या हैं तो हर जगह से यही जवाब मिला कि स्कूल अच्छे बनने चाहिए, अस्पतालों में सारी सुविधाएं होनी चाहिए, सड़कें अच्छी बननी चाहिए। स्पष्ट था कि यह धरना प्रदर्शन भी एक टूलकिट का हिस्सा था। लोकसभा चुनावों के लिए मतदान होते ही यह प्रदर्शनकारी भाजपा उम्मीदवारों के घर के बाहर से हट गये। ऐसा लगा कि उनकी सारी समस्याओं का या तो समाधान हो गया है या टूलकिट के तहत दिया गया टास्क पूरा हो गया है। वैसे जहां तक चढ़ूनी की बात है तो आपको बता दें कि उन्होंने हरियाणा में कुरुक्षेत्र की पेहोवा विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा था। यहां जनता ने मात्र 1170 वोट देकर उनकी जमानत तक जब्त करा दी। हम आपको यह भी याद दिला दें कि इन तथाकथित किसान नेताओं ने 2022 के पंजाब विधानसभा चुनावों में भी किस्मत आजमाई थी। पंजाब की 31 में से 22 किसान यूनियनों ने संयुक्त समाज मोर्चा नामक पार्टी बनाकर चुनाव लड़ा था और किसान नेता बलबीर सिंह राजेवाल को अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार भी घोषित किया था। लेकिन एक को छोड़कर इनके बाकी उम्मीदवार अपनी जमानत तक नहीं बचा पाये थे। अब हरियाणा में भी इस पार्टी का जो हश्र हुआ है उससे साफ है कि आम जनता और आम किसानों का समर्थन इन लोगों के पास कभी भी नहीं था। विदेशी इशारे पर और विदेशी पैसे के बलबूते भारत की छवि को खराब करने और सरकार के खिलाफ माहौल बनाने का जो षड्यंत्र रचा गया था उसका सच सामने आ चुका है। यह समय है कि देश सतर्क हो जाये और गैर-राजनीतिक आंदोलनों की असली मंशा को पहचाने। बहरहाल, चढ़ूनी के बयान पर हमलावर होते हुए भाजपा ने कहा है कि जिस किसान आंदोलन को सहज और स्वाभाविक बताया गया था, वह दरअसल कांग्रेस की ओर से 'प्रायोजित और पोषित' था। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा है कि चढ़ूनीजी का जो वक्तव्य आया है, उसने एक बार फिर उजागर कर दिया है कि कांग्रेस की जमीन के अंदर क्या छुपा हुआ है। उन्होंने कहा है कि इससे एक बात बहुत साफ हो गई है कि जिस आंदोलन को सहज और स्वाभाविक आंदोलन कहा जा रहा था, वह कांग्रेस के द्वारा प्रायोजित और पोषित आंदोलन था।

जानवरों की दुनिया कितनी अनोखी और दिलचस्प

स्वर्गीय रतन टाटा को कुत्तों से बहुत लगाव था। बताया जा रहा है कि जब से वह अस्पताल में दाखिल हुए, उनके पालतू कुत्ते गोवा ने कुछ नहीं खाया था। उनके अंतिम संस्कार के समय भी एक वीडियो में वह बहुत विचलित और उदास दिखा। एक लेख में बताया गया था कि जब रतन टाटा अपने दफ्तर जाते थे, तो सड़क के कुत्ते उन्हें घेर लेते थे। वे दफ्तर के अंदर उन्हें लिफ्ट तक छोडने आते थे। उस दफ्तर में जहां बिना अनुमति के किसी मनुष्य का प्रवेश भी वर्जित था। यह भी देखने में आता है कि अपने पालक के लिए उनके पालतू कई बार जान गंवा देते हैं। कई बार उनकी रक्षा करने के कारण भी वे जान दे देते हैं। एक वीडियो में देख रही थी कि गायों का एक विशाल झुंड बड़े मैदान में खड़ा था। उनसे बहुत दूर एक लड़का खड़ा था, जिसकी पालतू गाय भी इसी झुंड में थी। एक दूसरा लड़का, इस लड़के के पास आया और दिखावे के लिए गाय के मालिक को पीटने लगा। गाय पूंछ उठाकर दौड़ी आई और दूर तक उस नकली हमलावर का पीछा किया। कुछ साल पहले विदेश में एक तोते ने शोर मचाकर अपने मालिक को जगाया था, क्योंकि घर में आग लग गई थी। बचपन में पड़ोस के गांव के एक जमींदार ने हाथी पाला हुआ था। हाथी किसी बात पर मालिक से नाराज हो गया। उसने सूंड में लपेटकर मालिक को जमीन पर पटक दिया। मालिक की मृत्यु हो गई। लेकिन बाद में हाथी को इतना अफसोस हुआ कि मालिक का जहां अंतिम संस्कार हुआ था, एक महीने तक वह बिना खाए-पिए वहीं खड़ा रहा और प्राण त्याग दिए। घोड़ों पर लिखी 2 पुस्तकें 'ब्लिट्ज' और 'ब्लैक ब्यूटी' अनोखी हैं। इन्हें पढ़कर घोड़ों की दुनिया और उनकी तकलीफों के बारे में जाना जा सकता है। न्यूजीलैंड का वह वीडियो तो आपने देखा ही होगा जिसमें एक महिला ने 2 शेर पाले हुए थे। बाद में उन्हें शेरों के अभयारण्य में छोड़ दिया गया। जब भी महिला उनसे मिलने जाती वे कूदकर उसके ऊपर चढने की कोशिश करते, चाटते। बाघों के बारे में 'बॉर्न फ्री' सीरीज की तीनों किताबें पढ़ी जा सकती हैं। उसमें भी एक महिला ने एक शिशु शेरनी पाली थी। बाद में उसे जंगल में छोड़ दिया गया। जब वह मां बनी तो अपने परिवार के साथ उस महिला से मिलने घर आई। विदेश की एक घटना यह भी पढ़ी थी कि एक आदमी को एक मगरमच्छ नदी के किनारे घायल अवस्था में मिला था। वह उसे घर ले आया। उसका इलाज किया। जब वह ठीक हो गया, तो वह आदमी उसे नदी में छोड़ आया। लेकिन आश्चर्य, सवेरे जब उसने दरवाजा खोला, तो मगरमच्छ बरामदे में सो रहा था। उत्तर प्रदेश की वह घटना तो याद ही होगी।

मलेरिया से भी गंभीर है डेंगू का दंश

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

भारत सहित दुनिया के देशों में डेंगू का प्रकोप तेजी से बढ़ता जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित दुनिया के देश डेंगू को लेकर अब गंभीर हो गए हैं। इसका बड़ा कारण है कि दुनिया के 130 देश डेंगू की जद में आ चुके हैं। ऐसा माना जा रहा है कि इस समय 4 अरब लोग डेंगू से प्रभावित हो रहे हैं और 2050 तक यह आंकड़ा पांच अरब को पार कर जाएगा। भारत की बात की जाए तो देश के लगभग हर प्रदेश में डेंगू के नित नए केस सामने आ रहे हैं। भले ही यह माना जाता हो कि डेंगू के कारण मौत की दर बहुत कम है और सामान्यत: डेंगू सामान्य पेरासिटामोल और डॉक्टरों के सलाह के अनुसार पेय पदार्थ एलोरा ज्यूस आदि लेने से ठीक हो सकता है। हालांकि कोल्ड ड्रिंक की सलाह नहीं दी जाती है। सामान्यत: यह माना जाता है कि डेंगू के कारण तेजी से प्लेटरेट में कमी आती है पर विशेषज्ञों का मानना है कि प्लेटरेट से भी ज्यादा गंभीर होता है ब्लड प्रेशर में कमी आना है। प्लेटरेट के साथ ही ब्लडप्रेशर को नियंत्रित रखना जरुरी हो जाता है। यह ध्यान रखना अधिक जरुरी हो जाता है कि ब्लड प्रेशर लो नहीं होना चाहिए। डेंगू का असर सीधे लीवर पर पड़ता है और ब्लड के अंत:स्राव की समस्या हो जाती है। जो अपने आप में गंभीर होती है। उल्टी होने से डिहाईड्रेशन की समस्या अधिक गंभीर हो जाती है। दरअसल एक समस्या यह है कि डेंगू का पता भी तीन चार दिन बाद पता चलता है। इसलिए सावधानी सबसे बड़ी जरुरी हो जाती है। खैर सबसे अधिक चिंतनीय यह है कि डेंगू का प्रकोप तेजी से बढ़ता जा रहा है विश्व स्वास्थ्य संगठन अब अधिक गंभीर हो गया है।

गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि इंडोनेसिया में ड्रोन से सर्वे कर मच्छरों के लार्वा की खोज करके नष्ट करने का यह परिणाम रहा है कि डेंगू के मामलों में 70 फीसदी तक कमी आई है। डेंगू से बचाव के लिए डेंगू मच्छर का खात्मा करने वाले एंटीडेंगू मच्छर

को दुनिया के करीब 14 देशों में छोड़े जाने का निर्णय किया गया है। वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोगशाला में एंटीडेंगू मच्छर का सफल प्रयोग किया जा चुका है और ब्राजील में बड़ा केन्द्र बनाते हुए बोल्वाशिया मच्छर का उत्पादन आरंभ कर दिया गया है। हांलाकि किन किन 14 देशों में एंटी डेंगू मच्छरों को छोड़ा जाएगा यह निर्णय विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अभी किया जाना है। पर एक बात साफ हो चुकी है कि डेंगू पर समय रहते रोक अभियान चलाया जाना आवश्यक है। क्योंकि डेंगू अब किसी देश की सीमा में बंधा नहीं रह गया है। देश दुनिया की सरकारों और विश्व स्वास्थ्य संगठन के सामने डेंगू बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। दरअसल डेंगू की गंभीरता को देखते हुए ही गैर सरकारी वर्ल्ड मास्कीटों प्रोग्राम के तहत एंटीडेंगू मच्छर विकसित किया गया है। 2023 में इंडोनेशिया में इनका प्रयोग किया जा चुका है और इनके प्रभाव से 95 प्रतिशत तक सकारात्मक प्रभाव देखा गया है।

हालांकि 2011 में आस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में लगातार चार बरसाती सीजन में एंटीडेंगू मच्छर का प्रयोग किया गया और दावा किया गया कि वहां चार बरसातों में एक भी डेंगू का मामला सामने नहीं आया। इन मंच्छर में एक बैक्टिरिया वोल्वाशिया पापीएंटिस डाला गया है। वैज्ञानिकों का दावा है कि इससे बीमारी वाले मच्छरों को वायरस फैलाने से रोकने में सफल होंगे। अब तक के परीक्षणों में यह खरे भी उतरे हैं। डेंगू की भयावहता को इसी से समझा जा सकता है कि 16 मई को भारत में राष्ट्रीय डेंगू दिवस मनाया जाने लगा है। इस दिवस के आयोजन के माध्यम से लोगों में अवेयरनेस जागृत की जाती है। दरअसल डेंगू एडीज एजिप्टी प्रजाती की मादा मच्छर के कारण तेजी से फैलता है। बरसात के दिनों में यह मच्छर तेजी से फैलता है। जमा पानी और गंदगी आदि में डेंगू मच्छर तेजी से बढ़ते हैं। जुलाई से सितंबर, अक्टूबर तक डेंगू का प्रकोप अधिक रहता है। शुरुआती दो तीन दिन तक तो जांच में पता ही नहीं चलता है। डेंगू में 3 से 7 दिन अधिक गंभीर होते हैं। प्लेटरेट्स में तेजी से गिरावट होती है। हांलाकि डेंगू के कारण मौत तुलनात्मक रुप से कम है पर डेंगू का प्रभाव क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में एंटीडेंगू मच्छर शुभ संकेत माने जा सकते हैं।

डेंगू के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए देश में ड्रोन का प्रयोग अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इंदौर में डेंगू मच्छरों को नष्ट करने के लिए ड्रोन के उपयोग का निर्णय किया गया है। देश के अन्य हिस्सों में भी ड्रोन का उपयोग प्रयोग के रुप में किया जाने लगा है। सवाल साफ है कि डेंगू के प्रकोप को चुनौती के रुप में लेते हुए सरकार को ठोस प्रयास करने होंगे। स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकारी और गैरसरकारी सभी संस्थाओं को आगे आना होगा और सबसे अधिक लोगों में अवेयरनेस के साथ ही स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता और सफाई के प्रति चेतना विकसित करनी होगी।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की एक प्रेरणादायक जीवन यात्रा

सपनों को साकार करने वालों में से एक थे ''मिसाइल मैन'' डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। डॉ. अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम जिन्हें समस्त भारतवासी प्यार से ''मिसाइल मैन'' के नाम से जानते हैं, जिनका जीवन एक साधारण परिवार से उठकर विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने की अद्भुत कहानी है। वे न केवल एक वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्ध हुए बल्कि अपने सरल और प्रेरक व्यक्तित्व के कारण वे देश के करोड़ों युवाओं के आदर्श बने। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के एक छोटे से गांव रामेश्वरम में हुआ। उनका परिवार आर्थिक रूप से बहुत साधारण था, लेकिन उनके माता-पिता ने उन्हें उच्च नैतिक मूल्यों और शिक्षा के प्रति समर्पण की सीख दी। उनके पिता एक नाविक थे और उनकी माँ एक धार्मिक महिला थीं। डॉ. कलाम का बचपन संघर्षों से भरा हुआ था, लेकिन उन्होंने कभी अपने सपनों को मरने नहीं दिया। बाल्यावस्था में ही उन्होंने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अखबार बेचने का काम किया। इस दौरान उन्होंने अपनी पढ़ाई में कोई कमी नहीं आने दी और अपनी शिक्षा को हमेशा प्राथमिकता दी।

कलाम की शिक्षा का प्रारंभ रामेश्वरम के एक प्राथमिक विद्यालय से हुआ। वे एक प्रतिभाशाली छात्र थे और विज्ञान और गणित में विशेष रुचि रखते थे। उनके शिक्षक उनके उज्ज्वल भविष्य को लेकर हमेशा उत्साहित रहते थे और उन्हें प्रेरित करते थे। आगे की शिक्षा के लिए उन्होंने श्वार्ट्ज हायर सेकेंडरी स्कूल में दाखिला लिया, जहाँ उनकी वैज्ञानिक दृष्टि और रुचि को और अधिक विकसित होने का अवसर मिला। विज्ञान के प्रति उनके लगाव ने उन्हें मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तक पहुँचाया, जहाँ उन्होंने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया। यहाँ पर भी उन्होंने अपने कठिन परिश्रम और लगन से सभी को प्रभावित किया। उनकी प्रतिभा और कार्य के प्रति समर्पण ने उन्हें इस क्षेत्र में गहरी समझ और अद्वितीय ज्ञान दिया, जिसने भविष्य में भारत के अंतरिक्ष और रक्षा अनुसंधान में उनका मार्ग प्रशस्त किया।

वैज्ञानिक करियर की शुरुआत: अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ. कलाम ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में एक वैज्ञानिक के रूप में अपना करियर शुरू किया। उनके प्रारंभिक कार्य ने उन्हें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ईसरो) से जोड़ दिया, जहाँ उन्होंने देश के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण वाहन (एसएलवी) के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सफलता ने उन्हें वैज्ञानिक समुदाय में एक प्रमुख स्थान दिलाया। उनकी मेहनत और समर्पण ने उन्हें भारत के मिसाइल विकास कार्यक्रम का नेतृत्व करने का अवसर दिया, जहाँ उन्होंने कई प्रमुख मिसाइलों के विकास में अहम योगदान दिया। इसके कारण ही उन्हें ''मिसाइल मैन'' के नाम से प्रसिद्धि मिली। उनकी देखरेख में भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया और कई मिसाइल प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।

अग्नि और पृथ्वी मिसाइल का किया विकास: डॉ. कलाम का सबसे महत्वपूर्ण योगदान अग्नि और पृथ्वी मिसाइलों के विकास में था। यह मिसाइलें भारत की रक्षा क्षमता को एक नई ऊँचाई पर ले गईं। उनके नेतृत्व में भारत ने सामरिक महत्व की मिसाइलों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया, जिसने न केवल भारत की सैन्य शक्ति को मजबूत किया, बल्कि विश्व स्तर पर भारत को एक मजबूत राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। डॉ. कलाम के इस योगदान ने उन्हें भारत के रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाया। उनका दृष्टिकोण यह था कि देश को आत्मनिर्भर और सुरक्षित बनाने के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका विश्वास था कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से देश के युवा अपनी सच्ची क्षमता को पहचान सकते हैं और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकते हैं ।

9 लाख की ब्राउन शुगर जब्त

यूपी से अंबिकापुर के रास्ते छत्तीसगढ़ लाई गई, खरीददार समेत 6 आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, मुंगेली एजेंसी। छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले में पुलिस ने 9 लाख 20 हजार के ब्राउन शुगर के साथ 6 तस्करों को गिरफ्तार किया हैं। उनके पास से 46 ग्राम ब्राउन शुगर, एक अर्टिगा कार और 6 मोबाइल जब्त किया गया है। जिसकी कुल कीमत 17 लाख 88 हजार रुपए है।

पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल ने बताया कि, रविवार शाम को 5 बजे बिलासपुर से मुंगेली आ रही एक अर्टिगा कार सीजी 28 के 4790 को रोककर तलाशी ली गई। उसमें एक नाबालिग समेत 5 लोग बैठे मिले। कार में रखे एक बैग में 46 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद हुआ।

पूछताछ में सभी आरोपियों ने बताया कि, मुंगेली के परमहंस वार्ड निवासी आशुतोष जायसवाल के पास ब्राउन शुगर ले जा रहे हैं। इसके बाद आशुतोष को पकड़कर सिटी कोतवाली थाने लाया गया। वो कुछ साथियों के साथ मिलकर कारोबार करता है। इससे पहले, तीन बार ब्राउन शुगर आशुतोष को सप्लाई किया जा चुका हैं।

दूसरे प्रदेश से लाया जा रहा ब्राउन शुगर: आरोपियों ने बताया कि राज्य की सीमा से बस-कार और माध्यम से अंबिकापुर, कोरबा होते हुए लाया जा रहा है। इस बार यूपी से बनारस होते हुए अंबिकापुर के रास्ते ब्राउन शुगर लगाया गया था। इस कारोबार में बड़ा गिरोह सक्रिय है, जो सुनियोजित तरीके से कई प्रदेशों की सीमाओं के जरिए यहां लेकर पहुंचते हैं।

ये है पकड़े गए तस्कर: गिरफ्तार आरोपी में मुंगेली मल्हापारा निवासी आनंद उर्फ भुरू यादव, बुधवारी बाजार निवासी संदीप गोस्वामी, नंदी चौक निवासी सुनील जायसवाल, गोलबाजार निवासी प्रिंसू गुप्ता, आशुतोष जायसवाल और एक नाबालिग शामिल हैं। एनडीपीएस की धारा के तहत कार्रवाई करते हुए सभी आरोपियों को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

जिले में ब्राउन शुगर की पहली कार्रवाई: जिला बनने के बाद मुंगेली जिले में ऐसे मंहगे और खतरनाक नशे पर पहली बार बड़ी कार्रवाई हुई है। पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल ने बताया कि, अभी और भी आरोपियों की गिरफ्तारी हो सकती है। इस पूरे मामले में जांच अभी जारी है।

2 लाख का गांजा जब्त, 5 आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, जशपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले की तपकरा पुलिस ने सोमवार को ओडिशा से स्कॉर्पियो में गांजा लेकर आ रहे 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से 2 लाख का 21 किलो 75 ग्राम गांजा जब्त किया है। पकड़े गए सभी आरोपी ओडिशा के सुन्दरगढ़ के रहने वाले हैं।

जिसमें रंजित कुमार (32), राजेन्द्र टोप्पो (30), गणेश नेटी (40), शरण टाण्डिया (30) और सुशांत बढ़ाई (24) शामिल है। गांजा को ओडिशा से जशपुर जिले में खपाने आ रहे थे। एसपी ने पुलिस टीम को नगद इनाम देने की घोषणा की है। पुलिस अधीक्षक शशि मोहन सिंह ने बताया कि, तपकरा के स्टेट हाईवे-4 मेन रोड पर नाकेबंदी कर आने-जाने वाले वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। इसी दौरान ओडिशा की ओर से आ रही स्कार्पियो क्रमांक ओडी 15 ए 3266 को रोककर पूछताछ की गई।

आज जनदर्शन में आए 41 आवेदन

जनदर्शन में नागरिकों की समस्याओं पर कलेक्टर ने की त्वरित कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनदर्शन के माध्यम से आम नागरिकों की समस्याओं को सुना। जिले के ग्रामीण जन और नागरिकों ने जनदर्शन में अपनी छोटी.बड़ी समस्याओं को सीधे कलेक्टर के समक्ष रखा। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्रता से निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। जनदर्शन में आज कुल 41 आवेदन प्राप्त हुए।

आज के जनदर्शन में आवेदक उर्मिला नामदेव निवासी सिविल लाइन मनेंद्रगढ दुकान के आगे दुकान संचालित करने के संबंध में, पूनम मौर्य निवासी जनकपुर जी.पी.एफ.सी.पी.एस. अथवा पेंशन विलंब होने के संबन्ध में, नानदाऊ बसोर निवासी माड़ीसरई भूमि के संबंध में, प्रेमवती निवासी झापर बिजली करेंट लगने से मृत्यु होने पर सहायता राशि दिलाने के संबंध में, मानमती निवासी मनेंद्रगढ़ फौती नामांतरण कराने के संबंध में, रामभरोस निवासी जमथान भूमि के संबंध में, सम्पत, राम बहादुर,बसंत लाल निवासी नेरुआ प्रस्ताव निरस्त करने के संबंध में, सिमरन निवासी मनेंद्रगढ़ कुछ छोटा मोटा काम दिलाने के संबंध में, देव सिंह निवासी खड़गवां पट्टा निरस्ती के संबंध में, अनुप कुमार सिंह निवासी रोकड़ा वन अधिकार पट्टा के संबंध में, शान्ता मिंज निवासी मनेंद्रगढ़ भूमि सीमांकन के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी नेरूआ अवैध जंगल की कटाई पर रोक लगवाकर उचित कार्यवाही करने के संबंध में, सुरेश सिंह निवासी नेरुआ नया पंप लगवाने के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी नेरूआ जांच में फर्जी पाया गया था एवं आज तक कार्यवाही ना होने के संबंध में, निर्मल सिंह श्याम निवासी सिरौली रनिंग वाटर का राशि भुगतान कराने के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी सिरौली नौगई एवं सिरौली को तहसील मनेंद्रगढ़ में यथावत किए जाने के संबंध में, उग्रसेन निवासी नेरुआ संतोष यादव के व्दारा भ्रष्टाचार करने के संबंध में, शिवभजन निवासी नागपुर भूमि के संबंध में, समस्त ग्रामवासी घुटरा महुआ बिनने वाली जाली का वितरण न करने के संबंध में, अर्चना चतुर्वेदी निवासी परसगढ़ी भूमि के संबंध में, प्रेमा निवासी मनेंद्रगढ़ भूमि के संबंध में, रामेश्वर दीवान निवासी मनेंद्रगढ़ भूमि के संबंध में, राम कुमार निवासी बिरोरी डांड भूमि के संबंध में, हेतराम दुबे देवाडांड हैंडपंप के पास शोकता गड्ढा का पैसा न मिलने के संबंध में, हीरा सिंह निवासी कोथारी पट्टा प्राप्त करने के संबंध में, शिव बालक निवासी मुक्तियारपारा भूमि के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी सेमरा मुवाअजा नहीं मिलने के संबंध में, लल्लाराम निवासी गिद्धमुडी भूमि के संबंध में, राम सिंह निवासी मनेंद्रगढ़ भूमि के संबंध में, लाखमन निवासी सल्का पट्टा निरस्तीकरण करने के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी करीं भूमि के संबंध में, फूलमती निवासी श्री रामपुर 50 वर्षो से काबिज भूमि का पट्टा देने के संबंध में, दीपनारायण निवासी बिछिया टोला भूमि के संबंध में, राम अवतार निवासी झगराखांण्ड भूमि के संबंध में, अब्दुल कालम अंसारी निवासी लेदरी जाति प्रमाण पत्र के संबंध में, समस्त वार्डवासी निवासी मनेंद्रगढ़ जबरन परेशान करने के संबंध में, हीरा सिंह निवासी लालपुर भूमि के संबंध में, भोला सिंह एवं वीर सिंह निवासी कटवार सोलर न लगने के संबंध में, राम अवतार निवासी झगराखांण्ड भूमि के संबंध मेंए जितेन्द्र कुमार निवासी उधनापुर आवास की राशि वापस करने के संबंध में एवं उषा निवासी मनेंद्रगढ़ ने नगर निवेश से ले.आउट स्वीकृति करने के संबंध में शिकायत लेकर उपस्थित हुए थे ।

कलेक्टर ने प्राप्त सभी आवेदनों को पूरी गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों को उचित कार्यवाही करते हुए त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए ।

खारुन नदी में तैरता मिला अज्ञात व्यक्ति का शव

पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया, हत्या और आत्महत्या के एंगल से जांच कर रही पुलिस

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर के खारुन नदी में महादेव घाट के पास एक अधेड़ की लाश मिली है। मंगलवार सुबह लोगों ने नदी में शव देखकर डीडी नगर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उसकी पहचान की जा रही है। पुरानी बस्ती सीएसपी राजेश देवांगन ने बताया कि, आस-पास के थाने में गुमशुदा लोगों की दर्ज शिकायत की छानबीन की जा रही है। जिससे उसकी पहचान हो सके।

आत्महत्या या खुदकुशी जांच में जुटी पुलिस: डीडी नगर पुलिस ने मृतक की पहचान के साथ इस पहलुओं पर जांच कर रही है कि, उसने आत्माहत्या की है या उसकी हत्या हुई है। सभी पहलुओं को पुलिस खंगाल रही है। आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे और लोगों से पूछताछ जारी है।

खारुन नदी में डूबने की हर साल 10 से 12 घटनाएं: खारुन नदी में डूबने से हर साल 10 से 12 घटनाएं होती हैं। इसमें लोगों की लापरवाही भी सामने आती रही है। वहीं, सुरक्षा को लेकर भी हमेशा सवाल खड़े होते रहे हैं। साल 2022 में सात पखार एनिकेट घूमने टीनएजर्स का ग्रुप गया था। सभी दोस्त नहा रहे थे, तभी 2 दोस्त डूब गए थे। लंबे रेस्क्यू के बाद एसडीआरएफ की टीम को दोनों नाबालिग की लाश मिली थी।

इसी तरह 14 मई 2024 को खारुन नदी में डूबकर 11वीं के एक छात्र गौरव वर्मा की मौत हुई थी। वह दुर्ग पाटन का रहने वाला था। वहीं, जुलाई 2024 को 14 साल के बच्चे की मौत हुई थी। वो अपने दोस्तों के साथ एनीकट घूमने आया था। इस दौरान उसका पैर फिसल गया और वह पानी पर जा गिरा। जिसके बाद एसडीआरएफ की टीम को शव निकालने बुलाना पड़ा था।

बड़ा दादा बनता है कहकर बटनदार चाकू से मारा

दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान चाकूबाजी, सिगरेट पीने से मना करने पर वारदात

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान चाकूबाजी हुई है। वारदात में एक युवक गंभीर रूप से घायल है। घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि आरोपी ने बड़ा दादा बनता है कहकर वार किया है। मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है। मिली जानकारी के मुताबिक बदमाश युवक को बाजू में सिगरेट पीने और धुआं उड़ाने से मना किया था, तभी बदमाश युवक ने अपने दोस्तों को बुलाया और चाकू से हमला कर दिया। पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

दुर्गा प्रतिमा विसर्जन की झांकी देखने निकला था: दरअसल, सिविल लाइन क्षेत्र के मंगला चौक निवासी पुरुषोत्तम पटेल (33) रविवार की रात अपने साथियों के साथ दुर्गा प्रतिमा विसर्जन की झांकी देखने निकला था। वह जूना बिलासपुर हटरी चौक के पास अपने दोस्तों के साथ खड़ा था। उसी समय देर रात मो. मुस्तकीम उर्फ नफीस खान, सागर यादव और विजय यादव उसके बाजू में सिगरेट पी रहे थे। धुएं का कस उड़ा रहे थे। उन्हें पुरुषोत्तम ने बाजू में सिगरेट पीने से मना किया। इतने में बदमाश उसे बड़ा दादा बनता है कहते हुए गाली देने लगे, फिर देखते ही देखते उसकी पिटाई शुरू कर दी।

बदमाश ने निकाल लिया बटनदार चाकू और कर दिया हमला: इस दौरान युवकों ने हाथ-मुक्के से उसकी जमकर पिटाई की, जिसके बाद मो. मुस्तकीम ने अपने पास रखे बटनदार चाकू निकाल लिया और उसके पेट में घोंपने लगा। चाकू मारते पुरुषोत्तम बचने के लिए पीछे हटा तो उसके कमर के बांई तरह चाकू पड़ा। जिसके बाद वह जमीन पर गिर गया। इतने में हमलावर युवक वहां से भाग निकले।

पुलिस ने तीन आरोपियों को किया गिरफ्तार: घायल युवक को उसके दोस्तों ने अस्पताल में भर्ती कराया, जिसके बाद उन्होंने सिटी कोतवाली में शिकायत की। चाकूबाजी होने की खबर मिलते ही पुलिस ने बदमाशों की तलाश शुरू कर दी। सोमवार को पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर घेराबंदी कर आरोपी मो. मुस्तकीम उर्फ नफीस खान, सागर यादव एवं विजय यादव को दयालबंद स्थित रानी लक्ष्मी बाई स्कूल के पास पकड़ लिया।

बाइक की भिड़ंत में 2 युवकों की मौत

कबड्डी खेल देखकर घर लौट रहे थे दोनों, हादसे में 2 की हालत गंभीर

मीडिया ऑडीटर, महासमुंद एजेंसी। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में तेज रफ्तार 2 बाइक में जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में 2 युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं 2 युवक घायल हो गए हैं। घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मामला पटेल थाना का है।

प्रभारी विनोद कश्यप ने बताया कि, बागबाहरा रोड के ग्राम पचरी गांव के पास सोमवार साढ़े 11 बजे बाइक की आमने-सामने टक्कर हुई। इनमें 45 वर्षीया कुलहरिया निवासी कृष्णा दीवान और 48 वर्षीय रामाधर दीवान ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। दोनों नरतोरा से कबड्डी खेल देख कर लौट रहे थे।

शव को परिजनों को सौंपा गया: वहीं गबौद निवासी अन्य दो युवक इस हादसे में घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही 112 की टीम मौके पर पहुंची।

घायल दोनों युवकों को अस्पताल पहुंचाया गया। वहीं दोनों मृतकों के शवों का पोस्टमॉर्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है।

घायलों का नाम अभी क्लियर नहीं: टीआई विनोद कश्यप ने बताया कि घायलों की पहचान सिर्फ गबौद निवासी के रूप में ही हो पाई है।

घायलों का नाम अभी क्लियर नहीं हो पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

क्षेत्र में फैल रहा गुलाब की खुशबू, व्यापारियों को मिल रहा ताजा फूल

युवाओं एवं ग्रामीणों को मिला रोजगार और आत्मनिर्भरता के बेहतर अवसर

स्थानीय प्रशासन उद्यानिकी फसलों को दे रहा बढ़ावा

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिले के विकासखंड ग्राम कमलाडांड़ में फूलों की खेती ने एक नई क्रांति का सूत्रपात किया है। यहां के किसान एबी अब्राहम ने पारंपरिक खेती छोड़कर गुलाब की खेती में हाथ आजमाया और अब वह इस क्षेत्र में न केवल अपनी पहचान बना रहे हैं, बल्कि अन्य ग्रामीणों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन गए हैं। गुलाब की खेती से जहां उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है, वहीं स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हो रहे हैं। मनेन्द्रगढ़ विकासखंड के इस छोटे से गांव के किसान, जो पहले गेहूं, धान, और मक्का जैसी पारंपरिक फसलों की खेती करते थे, अब उद्यानिकी फसलों की ओर तेजी से रुझान दिखा रहे हैं। एबी अब्राहम इस बदलाव के मुख्य उदाहरण हैं, जिन्होंने एक एकड़ भूमि में डचरोज गुलाब की खेती शुरू की। फूलों की खेती न केवल उनकी उम्मीदों पर खरी उतरी, बल्कि इसके माध्यम से उन्हें उम्मीद से कहीं अधिक मुनाफा भी हुआ। अब उनके खेत में गुलाब की खुशबू फैली हुई है, जिसे वह आसपास के शहरों और कस्बों में बेच रहे हैं।

एबी अब्राहम द्वारा उगाए गए गुलाब की मांग पूरे सरगुजा संभाग और मध्यप्रदेश के सीमावर्ती शहरों में बढ़ रही है। मनेन्द्रगढ़ और आस-पास के बाजारों में भी उनकी आपूर्ति की जा रही है। फूलों की खेती से उन्हें मिलने वाला मुनाफा पारंपरिक फसलों की तुलना में कई गुना अधिक है। खास बात यह है कि फूलों की खेती में अधिक लागत की आवश्यकता नहीं होती, जिससे किसान अपनी आर्थिक स्थिति को तेजी से सुदृढ़ कर पा रहे हैं। गुलाब की खेती न केवल एबी अब्राहम के लिए लाभकारी साबित हो रही है, बल्कि इसने ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा किए हैं। फूलों की देखभाल, तुड़ाई, पैकिंग, और परिवहन से जुड़े कार्यों में कई स्थानीय लोगों को काम मिला है। जिससे आने वाले समय में इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं और अधिक बढ़ सकती हैं। फूलों की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय प्रशासन भी पूरी तरह से सक्रिय है। उद्यानिकी विभाग द्वारा समय-समय पर किसानों को तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे फूलों की खेती में आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर अधिक से अधिक लाभ कमा सके। एबी अब्राहम की मेहनत और प्रशासन के सहयोग से फूलों की खेती ने कमलाडांड़ में एक नई दिशा और गति प्राप्त की है। फूलों की खेती ने न केवल एबी अब्राहम को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है, बल्कि उन्हें समाज में एक नई पहचान भी दी है। अब वह स्थानीय स्तर पर एक सफल किसान के रूप में पहचाने जाते हैं, जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और सही दिशा में कदम बढ़ाकर अन्य किसानों को भी प्रेरित किया है। पारंपरिक फसलों से हटकर फूलों की खेती करना उनके लिए न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक रूप से भी एक महत्वपूर्ण बदलाव साबित हुआ है। एबी अब्राहम के खेतों में खिले गुलाबों की विभिन्न प्रजातियों से पूरा कमलाडांड़ क्षेत्र सुगंधित हो रहा है। गुलाब की खेती के कारण गांव का माहौल भी बदल रहा है। अब हर तरफ फूलों की खुशबू फैली हुई है, जिससे न केवल किसानों का जीवन बेहतर हो रहा है, बल्कि पर्यावरण में भी सकारात्मक बदलाव देखा जा रहा है। कमलाडाड़ के किसान एबी अब्राहम की फूलों की खेती की सफलता ने न केवल उनके जीवन को संवारा है, बल्कि इसने पूरे गांव में रोजगार और आत्मनिर्भरता का संदेश भी फैलाया है। स्थानीय प्रशासन के सहयोग से यह पहल आने वाले समय में और भी विस्तार ले सकती है, जिससे क्षेत्र के अन्य किसानों को भी इससे प्रेरणा मिलेगी और वे भी उद्यानिकी फसलों की ओर कदम बढ़ाएंगे।

रेत लोड ट्रैक्टर-ट्रॉली में दबकर युवक की मौत

महासमुंद में घर की दीवार से सटकर खड़ा था, तभी चपेट में आ गया युवक

मीडिया ऑडीटर, महासमुंद एजेंसी। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में रेत से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली में दबकर एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। युवक अपने घर की दीवार से सटकर खड़ा था। ट्रैक्टर ट्रॉली का पहिया गड्ढे में जा गिरा और ट्रॉली खड़े युवक की तरफ झुक गई। घटना कोतवाली थाना क्षेत्र के खट्टी गांव की है।

दरअसल, जिला मुख्यालय से करीब 18 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम पंचायत खट्टी में सुबह एक दर्दनाक हादसा हुआ। गांव से रेत से भरा ट्रैक्टर गुजर रहा था। इसी सड़क पर जनेश्वर (25) भी अपने घर की दीवार से टिककर खड़ा था। अचानक ट्रॉली का पहिया सड़क पर बने गडढे में जा गिरा।

ट्रॉली जनेश्वर की तरफ झुकः रेत से भरी होने के कारण ट्रॉली जनेश्वर की तरफ झुक गई। जिससे जनेश्वर दब गया। ग्रामीण ट्रॉली को धक्का देकर हटाने का प्रयास करते रहे, लेकिन रेत के वजन के कारण ट्रॉली नहीं हट पाई, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

पोस्टमॉर्टम के लिए मॉर्च्यूरी में रखवाया शवः ग्रामीणों ने इसकी सूचना महासमुंद सिटी कोतवाली पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने पहले ट्रॉली से रेत खाली की और फिर शव को बाहर निकाला। सिटी कोतवाली प्रभारी शरद दुबे ने बताया कि शव को पोस्टमॉर्टम के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल की मॉर्च्यूरी में रखवाया गया है। पंचनामा के बाद अपराध दर्ज किया जाएगा।

दिल्ली-एनसीआर में लगातार बढ़ रहा प्रदूषण का स्तर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली समेत पूरे एनसीआर में धीरे-धीरे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है और स्थिति खराब हो रही है। एक्यूआई खतरे के निशान के पार पहुंच गया है। नोएडा ग्रेटर, नोएडा, गाजियाबाद और दिल्ली के कई ऐसे इलाके हैं जहां पर एक्यूआई 300 के आंकड़े को पार कर चुका है। इसको देखते हुए दिल्ली सरकार ने आज एक हाई लेवल बैठक बुलाई है। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने यह हाई लेवल बैठक बुलाई है जिसमें सभी विभाग के अधिकारी और मंत्री शामिल होंगे। इसके साथ ही दिल्ली समय पूरे एनसीआर में ग्रैप का पहला चरण लागू कर दिया गया है जो आज मंगलवार सुबह 8 बजे से प्रभावी हो जाएगा। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय पहले ही विंटर एक्शन प्लान जारी कर चुके हैं और उनके मंत्रालय द्वारा जगह-जगह जाकर यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि डस्ट और पॉल्यूशन से पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। आज की इस बैठक में गोपाल राय भी शामिल होंगे। दिल्ली सरकार ने इस बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए पहले ही 1 जनवरी तक पटाखे जलाने, रखने और बनाने पर रोक लगा दी है। मौसम विभाग से मिले आंकड़ों की बात करें तो दिल्ली के आनंद विहार में एक्यूआई 416 दिखा रहा है। जो सबसे खतरनाक श्रेणी में आता है इससे लोगों को सांस लेने में काफी ज्यादा परेशानी महसूस होती है।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड : मुंबई पुलिस ने बहराइच से दो लोगों को हिरासत में लिया

बहराइच (एजेंसी)। एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी हत्याकांड की जांच करते-करते मुंबई पुलिस यूपी के बहराइच पहुंच गई है। पुलिस ने मंगलवार को हत्यारोपी धर्मराज कश्यप के दो रिश्तेदारों हरीश और अनुराग कश्यप को हिरासत में लिया है। मुंबई क्राइम ब्रांच और स्पेशल सेल की संयुक्त टीम ने मंगलवार को बहराइच के गण्डारा क्षेत्र में छापेमारी की और दोनों को हिरासत में लिया। जानकारी के अनुसार, यह दोनों बाबा सिद्दीकी की हत्या में शामिल आरोपियों के साथ मिलकर कबाड़ का कारोबार करते थे। मुंबई पुलिस का दावा है कि इन दोनों युवकों से अहम सुराग मिल सकता है। बता दें कि एनसीपी नेता की 12 अक्टूबर की देर रात बांद्रा के निर्मल नगर में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। जब वो अपने बेटे के दफ्तर से बाहर निकल रहे थे, इस घटना को तीन लोगों ने मिलकर अंजाम दिया था। घटना के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए थे, लेकिन कुछ ही देर बाद दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया था। 66 वर्षीय नेता को तीन गोलियां लगी थी। इसके बाद उन्हें लीलावती अस्पताल ले जाया गया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। बाबा सिद्दीकी को 'वाई' श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की गई थी। पुलिस हिरासत में पूछताछ के दौरान आरोपियों ने दावा किया कि उन्हें सिद्दीकी या उनके कांग्रेस विधायक बेटे जीशान को मारने के लिए सुपारी मिली थी।

एशिया के सबसे बड़े टेक इवेंट का आगाज, पीएम मोदी ने किया उद्घाटन

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया के सबसे बड़े टेक इवेंट इंडिया मोबाइल कांग्रेस के 8वें संस्करण का मंगलवार को आगाज हो गया है। दूरसंचार विभाग और सीओएआई की साझेदारी में आयोजित इवेंट का उद्घाटन पीएम नरेन्द्र मोदी ने किया। इससे पहले पीएम ने दिल्ली के भारत मंडपम में पहली बार आयोजित होने वाले आईटीयू- डब्ल्यूटीएसए का भी उद्घाटन किया। यूनाइटेड नेशन के वर्ल्ड टेलीकम्युनिकेशन स्टेंड्राइजेशन असेंबली और इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन द्वारा इवेंट आयोजित किया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने आईएमसी 2024 के दौरान भारत के टेलीकॉम सेक्टर के बढ़ते प्रभाव का जिक्र किया।

केंद्रीय संचार मंत्री ने भारत में मोबाइल फोन के जबरदस्त इंफ्रास्ट्रक्चर का जिक्र करते हुए कहा कि यहां जब किसी परिवार में मोबाइल फोन आता है, तो उनके पास कई जरूरी सेवाओं की पहुंच हो जाती है। इनमें बैंकिंग सर्विस से लेकर सरकार के वेलफेयर स्कीम तक शामिल हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भारत की मोबाइल और ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के बारे में कहा कि इस समय भारत में मोबाइल यूजर की संख्यां 904 मिलियन यानी 90 करोड़ से बढ़कर 1.16 बिलियन यानी 116 करोड़ तक पहुंच गई है। वहीं, भारत में ऑप्टिकल फाइबर की पहुंच 11 मिलियन किलोमीटर से बढ़कर 41 मिलियन किलोमीटर तक हो गई है।

कॉमेडी नाइट्स विद कपिल' शो के एक्टर अतुल परचुरे का निधन

नई दिल्ली(एजेंसी)। 'द कपिल शर्मा शो' में कई किरदार निभा चुके दिग्गज एक्टर अतुल परचुरे का निधन हो गया। वह 57 साल के थे। कुछ साल पहले ही उन्हें कैंसर का पता चला था। उनके निधन ने वाकई सभी को सदमे में डाल दिया है। अतुल ने कई मराठी और हिंदी फिल्मों और टीवी शो में काम किया था। अतुल की मौत की खबर उस खबर के एक साल बाद आई है जब बताया गया था कि वो कैंसर से जूझ रहे थे। उन्होंने कहा था, 'मेरी शादी के 25 साल पूरे हो गए

थे। जब हम ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गए तो मैं ठीक था। लेकिन कुछ दिनों के बाद, मैं कुछ भी नहीं खा पा रहा था।

कोलकाता के डॉक्टरों के समर्थन में जोधपुर के डॉक्टर भी उतरे

जोधपुर(एजेंसी)। कोलकाता के डॉक्टरों के समर्थन में अब जोधपुर के डॉक्टर भी उतर गए हैं। जोधपुर के डॉक्टरों ने 12 घंटे के लिए क्रमिक अनशन शुरू किया है। आज देशव्यापी डॉक्टरों की हड़ताल के चलते जोधपुर के डॉक्टरों ने भी समर्थन देने का ऐलान किया है। इस क्रमिक अनशन में रेजिडेंट डॉक्टर के अलावा निजी डॉक्टर और संगठन का समर्थन भी हैं। डॉक्टरों का कहना है कि आज 12 घंटे का क्रमिक अनशन किया जा रहा है। डॉक्टरों पर बढ़ती हिंसा और दुर्व्यवहार के विरोध में डॉक्टर क्रमिक अनशन कर रहे हैं। उनका कहना है कि आए दिन अस्पतालों में डॉक्टर के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, मारपीट की जाती है। डॉक्टर सुरक्षित नहीं हैं। अगर समय रहते डॉक्टरों के लिए विशेष कानून लागू नहीं करेंगे, तो डॉक्टरों के ऐसे ही धरने देखने को मिलेंगे।

डॉक्टरों के अनशन के चलते मेडिकल कॉलेज प्रशासन भी अलर्ट मोड पर है। इसे गंभीरता से लेते हुए वैकल्पिक व्यवस्था करने के साथ ही जोधपुर के तीनों अस्पतालों मथुरादास माथुर अस्पताल, उम्मेद अस्पताल और महात्मा गांधी अस्पताल की मॉनिटरिंग की जा रही है। मॉनिटरिंग मेडिकल कॉलेज खुद कर रहा है।

तमिलनाडु के कई हिस्सों में बारिश

चेन्नई (एजेंसी)। दक्षिण-पूर्वी बंगाल की खाड़ी के ऊपर बने कम दबाव का क्षेत्र अभी उसी क्षेत्र में बना हुआ है और कल उत्तरी तमिलनाडु की ओर बढ़ने की संभावना है।

वहीं कल शाम से चेन्नई शहर और उपनगरों सहित तमिलनाडु के कई हिस्सों में छिटपुट से लेकर भारी बारिश हुई और कल शाम से राज्य में बारिश से संबंधित घटनाओं में चार लोगों की मौत हुयी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ये मौतें बिजली गिरने और दीवार गिरने के कारण हुईं और राज्य सरकार ने सोमवार देर रात ही पीड़ितों के लिए मुआवजे की घोषणा की। मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने मंगलवार सुबह कहा

कि इस प्रणाली पश्चिम-उत्तरपश्चिम की ओर बढ़ने की संभावना है और आज तक दक्षिण बंगाल की खाड़ी के मध्य भागों में एक स्पष्ट रूप से चिह्नित कम दबाव का क्षेत्र बन जाएगा।

इसके बाद इसमें तब्दीली होने और उत्तर तमिलनाडु, पुडुचेरी और इससे सटे दक्षिण आंध्र प्रदेश के तटों की ओर पश्चिम-उत्तरपश्चिम की ओर बढ़ने की संभावना है।

मध्य प्रदेश में बढ़ रहा है डेंगू का प्रकोप, ग्वालियर में मरीजों का आंकड़ा एक हजार

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में डेंगू धीरे-धीरे अपने पैर पसार रहा है। मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है और ग्वालियर में मरीजों का आंकड़ा एक हजार को भी पार कर गया है। स्वास्थ्य विभाग और नगरीय निकाय हालात पर काबू पाने सक्रिय हैं । साफ सफाई अभियान से लेकर जमाव वाले पानी की जांच की जा रही है। घर -घर सर्वे भी हो रहा है।

राज्य के विभिन्न इलाकों में बीते कुछ दिनों में डेंगू के मामलों में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई है। ताजा आंकड़े जो सामने आए हैं वह इस बात का खुलासा करते हैं कि बीते सालों के मुकाबले इस बार डेंगू का प्रकोप कहीं ज्यादा है। ग्वालियर में 1000 से ज्यादा, भोपाल में 450, इंदौर में 440 और

जबलपुर में 325 डेंगू के मामले सामने आए हैं। डेंगू पर नियंत्रण पाने के लिए नगरीय निकाय और स्वास्थ्य विभाग की टीमें सक्रिय हैं। घर-घर सर्वे कर रही हैं और साफ सफाई का अभियान भी चलाए हुए हैं मगर यह कोशिशें नाकाफी साबित हो रही है।

इंदौर की निकिता कुशवाह ने बढ़ाया भारत का मान, मिसेज यूनिवर्स फर्स्ट रनर-अप खिताब किया अपने नाम

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की बहू, निकिता कुशवाह,ने मिसेज यूनिवर्स 2024 प्रतियोगिता में फर्स्ट रनर-अप का प्रतिष्ठित खिताब हासिल कर भारत का नाम गर्व से ऊंचा किया है। उत्तर एशिया का प्रतिनिधित्व करते हुए निकिता की यह उपलब्धि वैश्विक मंच पर भारतीय महिलाओं की असीम प्रतिभा और दृढ़ संकल्प को दर्शाती है। पेशे से कार्डियक और रेस्पिरेटरी फिजियोथेरेपिस्ट, निकिता की यह जीत कड़ी मेहनत, समर्पण और एक अदम्य जीतने की भावना का प्रतीक है। दक्षिण कोरिया के इंचियोन में 2 से 10 अक्टूबर तक आयोजित 47वें मिसेज यूनिवर्स के संस्करण में 100 से अधिक देशों की प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में निकिता के फाइनल तक पहुंचने ने उनकी बुद्धिमत्ता, समाज सेवा के प्रति समर्पण और उनकी अद्वितीय सुंदरता का परिचय दिया।

चुनाव से पहले फ्री वाली स्कीमों पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव की तारीखों का आज ऐलान होने वाला है। इससे पहले राजनीतिक दलों ने जनता के लिए कई लोक-लुभावन स्कीमों का ऐलान किया है। महिलाओं को हर महीने 2000 रुपये तक के कैश की स्कीम का ऐलान हुआ है तो वहीं टोल टैक्स में छूट जैसे फैसले भी हुए हैं। ऐसे ही फैसलों को चुनौती देते हुए एक अर्जी सुप्रीम कोर्ट में दाखिल हुई है। मंगलवार को अदालत ने इस अर्जी पर सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार और चुनाव आयोग को नोटिस जारी किया है।

इस अर्जी में अदालत से मांग की गई कि चुनाव से ठीक पहले मुफ्त वाली स्कीमों के ऐलान को रिश्वत घोषित करना चाहिए। यह वोटर को एक तरह से रिश्वत का झांसा देना है। सुप्रीम कोर्ट ने इस अर्जी पर केंद्र और चुनाव आयोग को नोटिस जारी करके जवाब मांगा है। इसके अलावा दाखिल अर्जी को पहले से लंबित याचिकाओं के साथ ही जोड़ दिया है। याची ने यह मांग भी की थी कि चुनाव से कुछ वक्त पहले से मुफ्त की योजनाओं की घोषणा पर रोक लग जानी चाहिए। ऐसी रोक सिर्फ सरकार ही नहीं बल्कि सभी राजनीतिक दलों पर लागू होनी चाहिए।

बता दें कि महाराष्ट्र से लेकर झारखंड तक ऐसी योजनाओं की भरमार देखी गई है। महाराष्ट्र सरकार ने मुंबई एंट्री पर लगने वाले सारे टोल टैक्स कारों के लिए माफ कर दिए हैं। इसके अलावा लड़की बहिन योजना का ऐलान हुआ है।

वहीं ओबीसी आरक्षण के लिए क्रीमी लेयर बढ़ाने की केंद्र से सिफारिश की गई है।

पंजाब में पंचायत चुनाव, 50 प्रतिशत से ज्यादा वोटिंग

चंडीगढ़,एजेंसी। फिरोजपुर में वोटिंग के दौरान बैलट बॉक्स में स्याही फेंक कर वोट बर्बाद कर दिए गए। वहीं, मोगा में गोली चलने के बाद बूथ पर भगड़द मच गई। पंजाब में पंचायत चुनाव के लिए वोटिंग के बाद अब काउंटिंग जारी है। नतीजे आने शुरू हो गए हैं। फिरोजपुर में बीकॉम की छात्रा सरपंच बनी है। वहीं, एक मंत्री की पत्नी ने भी पंचायत चुनाव जीत लिया है। इसके लिए वोटिंग सुबह 8 बजे शुरू हो गई थी, जो 4 बजे तक जारी रही। 50 फीसदी से ज्यादा वोटिंग हुई है, अभी इलेक्शन कमीशन की ओर से फाइनल आंकड़ा जारी नहीं किया गया है। राज्य में कुल 13,937 ग्राम पंचायतें हैं। इन पर चुनाव ईवीएम के बजाय, बैलट पेपर से हुए। बैलट पेपर पर नोटा का विकल्प भी रखा गया था। वोटिंग के दौरान पटियाला, मोगा, अमृतसर, तरनतारन, बठिंडा, जालंधर, गुरदासपुर और लुधियाना में बवाल हुआ। पटियाला, मोगा, अमृतसर, तरनतारन, बठिंडा और बरनाला में गोलियां चलने के साथ पथराव हुआ। वहीं कपूरथला में पोलिंग बूथ पर तलवारें चलीं। जिसमें कई लोग घायल हुए। राज्य में 3798 सरपंच पहले ही निर्विरोध चुने जा चुके हैं। वहीं, 48861 पंच भी बिना मतदान के घोषित हो चुके हैं। आज 25588 सरपंच पद और 80598 पंच पद के लिए मतदान हुआ। पटियाला में मतदान केंद्र पर गोलियां चलने के साथ पथराव हुआ। घटना में 2 लोग घायल हो गए। आरोप है कि बाहरी लोगों ने गांव के

मतदान केंद्र पर फायरिंग की सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब में चल रहे पंचायत चुनाव में दखल देने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव पर रोक लगाने से इनकार करते हुए कहा कि चुनाव रोकना गंभीर मामला है। बरनाला में पंचायत चुनाव ड्यूटी पर तैनात एक पुलिस कर्मचारी की मौत हो गई। मृतक की पहचान सीनियर कांस्टेबल लक्खा सिंह (53 वर्ष) के रूप में हुई है। जगराओं के कोठे अठचक्क गांव में मतदान शुरू होते ही विवाद हो गया। लोगों के हंगामे के बाद यहां वोटिंग रुकी हुई है। इसके अलावा जगराओं के गांव पोना और गांव डल्ला में चुनाव रद्द करने के आदेश दिए गए हैं। पंचायत चुनाव ड्यूटी के लिए फाजिल्का से जालंधर आए एक टीचर की सोमवार रात संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मानसा के गांव मानसा खुर्द में वोटिंग रोकी गई है। बैलेट पेपर गलत छपा हुआ था। जैसे ही मामला ध्यान में आया, उसके बाद उच्च अधिकारियों के ध्यान में यह मामला लाया गया। तरनतारन जिले के गांव सोहल सैण में मतदान केंद्र के बाहर गोली चली। गोली लगने से एक व्यक्ति घायल हो गया। मतदान के लिए कतार में खड़े लोगों के बीच विवाद हुआ। फिरोजपुर के बस्ती बूटा वाली में 23 साल की राजवीर कौर सरपंच बनी हैं। वह बीकॉम की पढ़ाई कर रही हैं। उनकी जीत के बाद गांव में जश्न का माहौल है। फिरोजपुर में जीरा के लोहके खुर्द में लोगों ने बताया कि सत्ताधारी दल के लोग बूथ पर आए थे। तहसीलदार ने मौके का मुआयना किया है। स्छरूको इस बारे में सूचित किया गया। लोगों ने मांग की है कि इस चुनाव को मुल्तवी किया किया जाए। मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि पोलिंग बूथ पर कैमरा लगा हुआ है। इससे सारी सच्चाई सामने आ जाएगी। आरोपी बच नहीं पाएंगे। जीरा के लोहके खुर्द में भी बूथ कैप्चरिंग की कोशिश हुई। वहां पर बैलट पेपरों पर स्याही डालकर वोटों को खराब किया गया। मौके पर मौजूद अधिकारियों ने बताया कि इस बारे में उच्च अधिकारियों को सूचित किया है।

यह घटना साढ़े चार बजे के करीब की है। पटियाला के सनौर नजदीक गांव खुंडा में गोलियां चलने के साथ पथराव हुआ। घटना में 2 लोग घायल हो गए। बताया जा रहा है कि गांव में शांतिपूर्ण तरीके से वोटिंग हो रही थी। इस बीच कुछ बाहरी लोग गांव के मतदान केंद्र पर पहुंच गए। जहां उनकी पोलिंग एजेंट से झड़प हो गई। इसके बाद स्थानीय लोगों की ओर से पथराव किया गया। जिसके बाद बाहर से आए लोगों ने फायरिंग कर दी। बताया जा रहा है कि 8 राउंड फायरिंग की गई। जिस शख्स को गोली लगी है उसकी पहचान सोनी उर्फ तेजा सिंह के रूप में हुई है,

जबकि दूसरा शख्स पथराव में घायल हुआ है। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जालंधर जिले की 695 ग्राम पंचायतों में सुबह 8 बजे से वोटिंग जारी है। इनमें दोपहर 2 बजे तक 48 प्रतिशत वोटिंग हो चुकी है।

रोनाल्डो ने पुर्तगाल की जीत में फिर दागा गोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अपना रिकार्ड 133वां अंतरराष्ट्रीय गोल दागकर पुर्तगाल को नेशंस लीग फुटबाल टूर्नामेंट में पोलैंड पर 3-1 से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई जबकि एक अन्य मैच में स्पेन ने डेनमार्क को 1-0 से हराया। लाइव फुटबॉल ऑनलाइन देखें रोनाल्डो ने 37वें मिनट में राफेल लेओ के शॉट के पोस्ट से टकराने के बाद रिबाउंड पर गोल किया। इससे पहले बर्नार्डो सिल्वा ने 26वें मिनट में पुर्तगाल की तरफ से पहला गोल किया था। रोनाल्डो इस साल के शुरू में यूरोपीय चैंपियनशिप में पुर्तगाल की तरफ सेपांच मैचों में एक भी गोल नहीं कर पाए थे लेकिन नेशंस लीग में उन्होंने अभी तक जो तीन मैच खेले हैं उन सभी में वह गोल करने में सफल रहे। इनमें क्रोएशिया के खिलाफ किया गया गोल भी शामिल है जो उनके करियर का 900वां गोल था। पोलैंड की तरफ से एकमात्र गोल मिडफील्डर पियोत्र ज़िलिंस्की ने 78वें मिनट में किया लेकिन डिफेंडर जान बेडनारेक ने खेल समाप्त होने से दो मिनट पहले आत्मघाती गोल करके पुर्तगाल की बड़ी जीत सुनिश्चित की। पुर्तगाल ग्रुप ए1 में तीन मैचों में नौ अंकों के साथ शीर्ष पर है। क्रोएशिया के छह अंक हैं और वह दूसरे स्थान पर है। उसने ज़गरेब में खेले गए मैच में स्कॉटलैंड को 2-1 से हराया। स्पेन ने नेशंस लीग के एक अन्य मैच में मार्टिन ज़ुबिमेन्डी के 79वें मिनट में किए गए गोल की मदद से डेनमार्क को 1-0 से हराया।

टेस्ट स्क्वॉड से ड्रॉप करने पर इस पूर्व पाकिस्तानी खिलाड़ी ने जताई नाराजगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार बल्लेबाज बाबर आजम, धाकड़ तेज गेंदबाज शाहीन अफरीदी और नसीम शाह का पाकिस्तान टेस्ट टीम से पत्ता कट गया है। तीनों को इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे और तीसरे टेस्ट के लिए नहीं चुना गया। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बयान में कहा कि प्रमुख खिलाड़ियों की मौजूदा फॉर्म और फिटनेस को ध्यान में रखते हुए आराम देने का फैसला किया गया है। बाबर समेत तीन स्टार खिलाड़ियों को ड्रॉप होने पर पूर्व पाकिस्तान क्रिकेटर बासित अली भड़क गए हैं। दरअसल, बासित अली ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा कि, सिलेक्शन कमेटी ने जो टीम घोषित की उसमें बाबर, शाहीन और नसीम नहीं है। कमेटी ने कहा कि इन खिलाड़ियों को रेस्ट दिया गया है। ये बहुत अच्छा जुमला है। अगर रेस्ट की जगह ड्रॉप कहते तो जुमला गलत है। ज्यादती है। ये क्रिकेट के साथ बालात्कार है, अगर ड्रॉप वाला जुमला आता है। ये हमारे हीरो थे और रहेंगे। परफॉर्मेंस ऊपर नीचे होती रहती है। इंग्लैंड सीरीज के बचे हुए मैचों के लिए पीसीबी की पुनर्गठित सिलेक्शन कमेटी ने पाकिस्तान टीम चुनी है। कमेटी में पूर्व क्रिकेटर आकिब जावेद, अजहर अली और अलीम डार नए सदस्य हैं। बासित का मानना है कि तीन बड़े प्लेयर्स को सिर्फ अपना दबदबा दिखाने के चलते बाहर किया गया है। उन्होंने कहा कि, जिन तीन बड़े नाम को ड्रॉप किया गया है।

फुटबॉल टीम के मुख्य कोच मार्केज का लक्ष्य भारत-वियतनाम मैत्री मैच में जीत हासिल करना

नाम दिन्ह (वियतनाम) (एजेंसी)। भारतीय फुटबॉल टीम के मुख्य कोच मनोलो मार्केज वियतनाम के खिलाफ़ होने वाले अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैच में अपनी पहली जीत की तलाश में होंगे। पहले यह तीन देशों का टूर्नामेंट था लेकिन लेबनान ने इससे हट गया। मार्केज के मुख्य कोच के रूप में अब तक के दो मैचों में भारत ने मॉरीशस के खिलाफ ड्रॉ खेला और पिछले महीने हैदराबाद में इंटरकांटिनेंटल कप में सीरिया से 0-3 से हार गया। इससे मार्केज अपनी पहली जीत दर्ज करने के लिए बेताब होंगे। 116वें स्थान पर काबिज वियतनाम फीफा रैंकिंग में भारत (126वें) से 10 स्थान ऊपर है। इस सदी में दोनों टीमें तीन बार एक-दूसरे से भिड़ चुकी हैं। 2004 में वियतनाम ने हो ची मिन्ह सिटी में एलजी कप में भारत को हराया था। 2010 में पूर्व कप्तान सुनील छेत्री ने हैट्रिक की भारतीय टीम ने पुणे में वियतनाम पर 3-1 से जीत हासिल की। दोनों टीमों के बीच आखिरी मुकाबला 2022 में हुआ था जब वियतनाम ने हो ची मिन्ह सिटी में कोच इगोर स्टिमक की भारतीय टीम के खिलाफ 3-0 से जीत हासिल की थी।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में मोहम्मद शमी को नहीं मिलेगा मौका! कप्तान रोहित शर्मा ने दिया चिंतित करने वाला अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले महीने नवंबर के आखिर में भारतीय टीम बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर जाएगी। जहां दोनों टीमों के बीच 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जाएगी। लेकिन इससे पहले एक बुरी खबर सामने आ रही है। दरअसल, भारतीय टीम के अनुभवी गेंदबाज मोहम्मद शमी का इस सीरीज में खेलना संदिग्ध है। वहीं भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने 16 अक्टूबर से न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलने जाने वाली टेस्ट सीरीज से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस की जिसमें उन्होंने शमी को लेकर बयान भी दिया है। दरअसल, प्रेस कॉन्फ्रेंस में मोहम्मद शी को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में रोहित शर्मा ने कहा कि, ईमानदारी से कहूं तो ऑस्ट्रेलिया सीरीज के लिए उन्हें चुनना मुश्किल है। उन्हें चोट लगी थी और उनके घुटनों में सूजन थी। इससे उनकी स्थिति थोड़ी खराब हो गई और उन्हें फिर से शुरुआत करनी पड़ी। वह डॉक्टरों और फिजियो के साथ एनसीए में हैं। हम कमजोर शमी को ऑस्ट्रेलिया नहीं ले जाना चाहते। हम उम्मीद कर रहे हैं कि वह जल्द वापसी करेंगे। जसप्रीत बुमराह को उप कप्तान बनाए जाने के बारे में बोलते हुए रोहित ने कहा कि, वह टीम के अनुभवी खिलाड़ियों में से एक हैं। उन्होंने बहुत ज्यादा कप्तानी नहीं की है। लेकिन मैंने उनसे जो भी चर्चा की है।

वह हमेशा गेंदबाजी समूह, गेंदबाजों या मैच के दौरान किसी भी चीज के लिए तैयार रहते हैं। उनका साथ होना अच्छा है। वहीं रोहित ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 मैच की टेस्ट सीरीज को लेकर कहा कि, हमारे लिए, हर टीम अलग-अलग चुनौतियां लेकर आती है।

हमने उनके खिलाफ बहुत क्रिकेट खेला है और उनके खिलाड़ियों और उनकी ताकत और कमजोरियों को जानते हैं। हमारे लिए ये उद्देश्य है कि हम अपनी पिछली सीरीज से बेहतर प्रदर्शन करना चाहते हैं।

डेब्यू जितनी रनों की भूख... विराट कोहली को लेकर ये क्या बोल गए गौतम गंभीर

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के सलामी बल्लेबाज विराट कोहली कुछ दिनों से आउट ऑफ फॉर्म चल रहे हैं। विराट इतनी कंसिस्टेंसी से रन बना चुके हैं कि अगर कुछ मैचों में उनके बल्ले से शतक नहीं निकलता है तो ऐसी बाते होने लगती हैं कि वह अच्छी फॉर्म में नहीं हैं। टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर ने इसको लेकर लोगों की सोच बदलने की बात कही है। उन्होंने कहा कि, डेब्यू के समय की तरह विराट में अभी भी रनों की उतनी भूख है और ऐसे में हर एक पारी के बाद उनका आकलन करना सही बात नहीं है। कोहली ने पिछली आठ पारियों में सिर्फ एक अर्धशतक लगाया। न्यूजीलैंड के खिलाफ बुधवार से शुरू हो रही तीन मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले उनका फॉर्म में लौटना जरूरी है। क्योंकि इसके बाद भारतीय क्रिकेट टीम को नवंबर में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाना है, जहां पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जानी है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले विराट की फॉर्म में वापसी बहुत अहम है। गंभीर ने आगे कहा कि, विराट कोहली को लेकर मेरी सोच एकदम साफ है कि वह वर्ल्ड लेवल का क्रिकेटर है। उसने इतने साल से इतना अच्छा प्रदर्शन किया है। रनों को लेकर उसकी भूख वैसी ही है जैसी डेब्यू के समय थी। उन्होंने यही भूख उसे वर्ल्ड लेवल क्रिकेटर बनाती है। मुझे यकीन है कि वह इस सीरीज और ऑस्ट्रेलिया में भी रन बनाएगा। गंभीर ने कहा कि किसी खिलाड़ी का आकलन एक खराब मैच या सीरीज के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए।

भारत के खिलाफ सीरीज से पहले न्यूजीलैंड को झटका, बेहतरीन गेंदबाज हुआ बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत- न्यूजीलैंड के बीच 3 मैचों की टेस्ट सीरीज 16 अक्टूबर से खेली जाएगी। पहला टेस्ट बेंगलुरु में खेला जाएगा। इससे पहले न्यूजीलैंड को बड़ा झटका लगा है। तेज गेंदबाज बेन सियर्स घुटने की चोट के कारण भारत के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए हैं। श्रीलंका में हाल ही में टेस्ट सीरीज के दौरान ट्रेनिंग के दौरान सियर्स को बाएं घुटने में दर्द हुआ था। पिछले हफ्ते न्यूजीलैंड में उनका स्कैन किया गया था। न्यूजीलैंड क्रिकेट की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि स्कैन में सियर्स के मेनिस्कस में चोट का पता चलने के बाद भारत जाने में देरी हुई। मेडिकल एडवाइस के बाद वह सीरीज से बाहर हो गए। ओटागो वोल्ट्स के अनकैप्ड गेंदबाज जैकब डफी को सीयर्स की जगह टीम में शामिल किया गया है। वे मंगलवार शाम को भारत के लिए रवाना होंगे। ओटागो के लिए सबसे ज्यादा विकेट झटकने वाले 30 वर्षीय डफी ने ब्लैककैप्स के लिए 6 वनडे और 14 टी20 मैच खेले हैं। वर्तमान में उनके नाम 299 प्रथम श्रेणी विकेट हैं। वहीं 26 वर्षीय बेन सियर्स ने इस साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ डेब्यू किया था। उन्होंने 1 टेस्ट की 2 पारियों में 5 विकेट झटके हैं।

पाकिस्तान स्क्वॉड से बाबर-शाहीन के आउट होने पर ये क्या कह गए बेन स्टोक्स?

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट से पाकिस्तान के तीन स्टार खिलाड़ियों बाबर आजम, शाहीन अफरीदी और नसीम शाह की छुट्टी हो गई है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे और तीसरे टेस्ट के लिए तीनों को ड्रॉप कर दिया। क्रिकेट जगत तीनों स्टार खिलाड़ियों को एकसाथ ड्रॉप करने पर हैरान है। पीसीबी का ये फैसला कई एक्सपर्ट और पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर के गले से नहीं उतर रहा है। इस बीच इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने इस मामले पर अपनी राय देने से मना कर दिया है। बेन स्टोक्स से सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में पूछा कि बाबर आजम, शाहीन और नसीम को पाकिस्तान टीम से ड्रॉप कर दिया गया, इस पर उनकी क्या राय है? तो स्टोक्स ने जवाब में कहा है कि, ये पाकिस्तान क्रिकेट का मुद्दा है। मेरा इससे कुछ लेना-देना नहीं।

स्टोक्स अनफिट होने के कारण पाकिस्तान वर्सेस इंग्लैंड पहले टेस्ट में नहीं खेले थे। वह मंगलवार से शुरू हो रहे दूसरे टेस्ट में दमखम दिखाते हुए नजर आएंगे। फिलहाल, तीन माचों की सीरीज में इंग्लैंड ने 1-0 की बढ़त बना रखी है। इंग्लैंड ने पहले मैच 823/7 का विशाल स्कोर खड़ा करने के बाद पारी और 47 रनों से जीत दर्ज की थी।

अंतरराष्ट्रीय करियर को कहेंगी अलविदा, इस दिन करेंगी ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान रानी रामपाल जल्द ही अपने अंतर्राष्ट्रीय करियर को अलविदा कह देंगी। बता दें कि, रानी लंबे समय यानी की 3 साल से टीम इंडिया से बाहर हैं। वहीं कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वह भारत-जर्मनी मैच के दौरान अपने फैसले का ऐलान कर सकती हैं। रानी रामपाल ने 2008 में भारत के लिए डेब्यू किया था। जहां उन्होंने 254 मैचों में 120 गोल अपने नाम किए हैं। साथ ही 2018 में हुए एशियन गेम्स में सिल्वर और 2014 के एशियाड में ब्रॉन्ज मेडल जीतने वाली टीम का भी अहम हिस्सा थीं। इसके अलावा रानी रामपाल की कप्तान में भारतीय महिला हॉकी टीम ने टोक्यो ओलंपिक में चौथा हासिल किया था टीम पदक से चूक गई थी। ओलंपिक के बाद उस दौरान के कोच श्योर्ड मरीन्ये अपने पद से हट गए थे और उनकी जगह यानेक शॉपमैन जिम्मेदारी संभाली थी। ऐसा माना जाता है कि यानेक और रानी के बीच रिश्तों में कुछ नोकझोंक थी। उस दौरान रानी रामपाल चोट से भी जूझ रही थीं

शायद ये वजह थी कि साल 2022 में गुजरात में हुए राष्ट्रीय खेलों में 6 मुकाबलों में 18 गोल करने के बावजूद उनकी टीम इंडिया में वापसी नहीं हुई।

भारत के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में नहीं खेल पाएंगे ग्रीन, पीठ का ऑपरेशन करवाएंगे

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन को रीढ़ की हड्डी में स्ट्रेस फ्रैक्चर के कारण भारत के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी टेस्ट श्रृंखला में नहीं खेल पाएंगे। यह 25 वर्षीय खिलाड़ी अपनी पीठ का ऑपरेशन करवाएगा जिससे उबरने में उन्हें छह महीने का समय लग जाएगा। पिछले महीने ब्रिटेन का दौरे में उन्हें इसका पता चला। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने जारी बयान में कहा,' 'तेज गेंदबाजों की रीढ़ की हड्डी में स्ट्रेस फ्रैक्चर होना आम बात है लेकिन कैमरन के फ्रैक्चर के पास वाले भाग में कुछ दिक्कत है जिसे चोट का कारण माना जा सकता है। ग्रीन का छह महीने तक बाहर रहने का मतलब है कि वह बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी ही नहीं, फरवरी में श्रीलंका के दौरे और चैंपियंस ट्रॉफी में भी नहीं खेल पाएंगे। उनका इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में

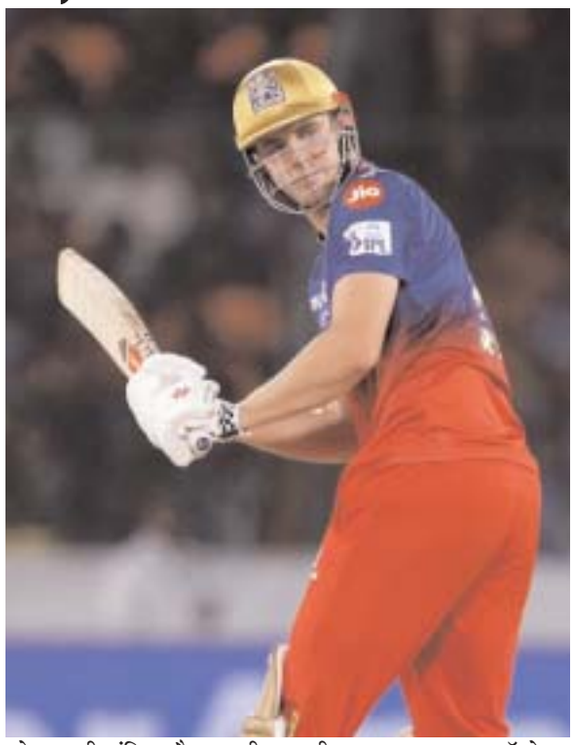

खेलना भी संदिग्ध है। जसप्रीत बुमराह, , जेम्स पैटिंसन, जेसन बेहरेनडोर्फ और बेन ड्वारशुइस जैसे तेज गेंदबाज भी इस तरह का ऑपरेशन करवा चुके हैं और ग्रीन ने भी यही विकल्प चुना। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने कहा, ''चिकित्सकों से परामर्श करने के बाद यह सुनिश्चित किया गया कि ग्रीन को ऑपरेशन करने से फायदा मिलेगा। इससे पहले कई तेज गेंदबाजों का इस तरह का ऑपरेशन सफल रहा है। इससे उबरने में लगभग छह महीने का समय लगेगा।'' भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला का पहला मैच 22 नवंबर सेपर्थ में खेला जाएगा। ग्रीन के बाहर होने का मतलब है कि ऑस्ट्रेलिया को अपने बल्लेबाजी क्रम में बदलाव करना होगा। सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर के इस साल के शुरू में संन्यास लेने के बाद ग्रीन की टेस्ट टीम में वापसी हुई थी। इस कारण स्टीव स्मिथ को पारी की शुरुआत करनी पड़ी थी। स्मिथ सलामी बल्लेबाज के रूप में सफल नहीं रहे थे और भारत के खिलाफ उन्हें फिर से अपने पसंदीदा चौथे नंबर पर उतारा जा सकता है।

विकास हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए : विजयवर्गीय

प्रभारी मंत्री ने किया दादा सुखेन्द्र सिंह स्टेडियम का लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री तथा सतना जिले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने मंगलवार को जिले के प्रवास के दौरान नगर पालिक निगम एवं स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट लिमिटेड द्वारा कराये जा रहे कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। उन्होंने 13 करोड 95 लाख रूपये लागत के नव निर्मित 5 विकास योजनाओं का लोकार्पण किया। जिनमें 10 करोड 56 लाख रूपये के लागत से नवीनीकृत दादा सुखेन्द्र सिंह स्टेडियम का कार्य भी शामिल हैं। इसके अलावा प्रभारी मंत्री 8 करोड 69 लाख रूपये लागत के नगर निगम के 9 विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। इस मौके पर नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, विधायक विक्रम सिंह, सुरेन्द्र सिंह गहरवार, महापौर योगेश ताम्रकार, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, जिलाध्यक्ष सतीश शर्मा, स्पीकर राजेश चतुर्वेदी, पूर्व विधायक शंकरलाल तिवारी, पूर्व स्पीकर अनिल जायसवाल, कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता, सीईओ जिला पंचायत सुसंजना जैन, कमिश्नर नगर निगम शेर सिंह मीना भी उपस्थित थे।

प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने इस अवसर पर कहा कि शहर और जिले का विकास हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। जनप्रतिनिधि और अधिकारी टीम भावना के साथ मिल बैठकर 4 साल का विकास मास्टर प्लान बनायें। उन्होंने कहा कि सतना में विकास की अनेक संभावनायें हैं और शहर के विकास के अच्छे काम भी हुए हैं। उन्होंने कहा कि सतना के स्वच्छता का ट्रैक देखा हैं। इसमें बहुत कुछ सुधार किया जा सकता है। इंदौर शहर का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वहां के लोगों में स्वच्छता, संस्कार और स्वभाव में शामिल हो चुकी है। जिले में भी यह संस्कार जनता के साथ बैठकर लायेंगे और सतना को विकसित तथा स्मार्ट शहर बनाने का प्रयास किया जायेगा। प्रभारी मंत्री ने कहा कि सतना में स्मार्ट सिटी लाने का सबसे बडा योगदान सांसद गणेश सिंह का रहा है। उन्होंने कहा कि यह डबल इंजन की सरकार का प्रभाव ही है कि स्मार्ट सिटी के माध्यम से शहर का विकास हो रहा है। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने कहा कि सतना जिले में विकास की असीमित संभावनायें हैं। सभी संभावनायें प्रभारी मंत्री के मार्गदर्शन और सहयोग से पूरी होंगी। राज्यमंत्री ने कहा कि इंदौर का विकास पूरे देश ने देखा है। प्रभारी मंत्री के मार्गदर्शन में सतना जिला भी औद्योगिक नगरी और विकसित जिला के रूप में उभर कर सामने आयेगा। सांसद गणेश सिंह ने कहा कि मध्यप्रदेश के 7 शहरों में स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत शहर की तस्वीर बदलने का कार्य हो रहा है। उन्होंने कहा कि सतना जिले में प्रमुख सतना और टमस नदी के सौन्दर्यीकरण और विकास का जल संसाधन विभाग के माध्यम से 65 करोड की लागत का डीपीआर तैयार कराया गया है। इसे नमामि गंगे परियोजना में स्वीकृत कराने के लिए राज्य सरकार का सहयोग आवश्यक होगा। सतना हवाई अड्डे में 1200 मीटर रनवे को बढाकर 1800 मीटर करने और नाइट लैंडिंग करने का भी प्रस्ताव है। सतना हवाई अड्डे को भी भोपाल और इंदौर की कनेक्टविटी की सुविधा प्रदान करने का सांसद ने आग्रह किया। उन्होंने कहा कि मेडीकल कॉलेज में 450 करोड रूपये की लागत का सुपरस्पेशिलिटी हास्पीटल का भी प्रस्ताव है। सतना संसदीय क्षेत्र में सतना और मैहर जिले की 1 लाख 40 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा वाली बरगी नहर का कार्य भी तेजी से किया जा रहा है। उन्होंने दादा सुखेन्द्र सिंह स्टेडियम के लोकार्पण पर जिले के खिलाडियों और जिले वासियों को बधाई और शुभकामनायें दी। इस मौके पर प्रभारी मंत्री ने पूर्व सांसद स्व. दादा सुखेन्द्र सिंह के पुत्र अरविन्द सिंह और पुत्रवधु अंजु सिंह को इस अवसर पर मंच पर सम्मानित किया। प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने नवीनीकृत दादा सुखेन्द्र सिंह स्टेडियम का भ्रमण कर अवलोकन किया और धावकों की दौड को हरी झण्डी दिखाकर स्टेडियम में खेल गतिविधियों का शुभारंभ किया। इस मौके पर कार्यक्रम में उपस्थित एशिया के सबसे ऊंचे व्यक्ति धर्मेन्द्र प्रताप सिंह का भी सम्मान किया गया। प्रभारी मंत्री ने धावकों की दौड में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे आकार सिंह, सचिन मिश्रा और आदर्श कुशवाहा को भी सम्मानित किया।

मैहर कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय बैंकर्स समन्वय समिति की बैठक संपन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में कलेक्टर रानी बाटड़ की अध्यक्षता में मंगलवार को जिला स्तरीय बैंकर्स समन्वय समिति की संयुक्त तिमाही समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस दौरान संबंधित विभागीय अधिकारी सहित बैंक के अधिकारी उपस्थित रहे।

इस दौरान कलेक्टर ने कहा कि मैहर जिले में मैहर के क्षेत्र की अपेक्षा अमरपाटन और रामनगर की स्थिति खराब है। जिले में 63 बैंक है, इनमें मैहर में 34, अमरपाटन में 18 और रामनगर में 11 बैंक ब्रांच है। जिसमें सुधार करने के लिए बैंक अधिकारियों को जमीनी स्तर पर कार्य में सुधार लाए, और बैंको की अधिक ब्रांच खोले जाने की आवश्यकता हैं। प्रत्येक बैंक की ब्रांच हर ब्लॉक मुख्यालय में खोली जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैहर जिले में बैंकों का सीडी रेशियो बहुत कम है। जिसमें एसबीआई, सेंट्रल बैंक, इंडियन बैंक की स्थिति ज्यादा खराब है।

मार्च से अभी तक मात्र 45 प्रतिशत से 46 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है जो बहुत कम है। बैंकर्स को मैहर जिले के बड़े इन्वेस्टर्स को जागरूक करने की आवश्यकता है।

कलेक्टर ने कहा कि प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत पारंपरिक शिल्पकारों और कारीगरों जैसे कारपेंटर, नाव बनाने वाले, अस्त्र बनाने वाले, लोहार, ताला बनाने वाले, हथौड़ा और टूलकिट निर्माता, सुनार, कुम्भार, मूर्तिकार, मोची, राज मिस्त्री, डलिया, चटाई, झाड़ू बनाने वाले, नाई, मालाकार, धोबी, दर्जी एवं मछली का जाल बनाने वाले कारीगर को सहायता के लिए बैंक ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार करे। ताकि अधिक से अधिक संख्या में लोग योजना से लाभान्वित हो सके। इसके अलावा पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करे।

जिले के प्रभारी मंत्री का आत्मीय स्वागत

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री तथा सतना जिले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय सतना जिले प्रवास पर हेलीकॉप्टर से सतना हवाई अड्डे पहुंचने पर भव्य आत्मीय स्वागत किया गया। प्रभारी मंत्री विजयवर्गीय का जनप्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों एवं आमजनों ने जगह-जगह भव्य स्वागत किया। हवाई अड्डा सतना में नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, विधायक विक्रम सिंह, विधायक सुरेन्द्र सिंह गहरवार, महापौर योगेश ताम्रकार, स्पीकर राजेश चतुर्वेदी, पूर्व विधायक शंकरलाल तिवारी, कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता, कमिश्नर नगर निगम शेर सिंह मीना ने प्रभारी मंत्री को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

मैहर जिले में 35 आवेदनों पर हुई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने जिले के विभिन्न अंचलों से अपनी समस्याओं का आवेदन लेकर आये 35 आवेदकों की समस्याएं सुनी एवं तहसील स्तर पर चलने वाली जनसुनवाई को वीसी के माध्यम से निगरानी की। समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये। इस मौके पर अपर कलेक्टर शैलेंद्र सिंह, एसडीएम मैहर विकास सिंह, महिला बाल विकास अधिकारी राजेंद्र बांगरे सहित विभागीय अधिकारी उपस्थिति रहे।

जनसुनवाई में आवेदक भीमसेन सोनी पिता रामसजीवन सोनी निवासी ग्राम सोहौला ने बताया कि आवास योजना की पात्रता सूची में मेरा नाम 2024 में 18 वें नम्बर पर था जो कि सचिव द्वारा सूची में नाम 38 नम्बर पर कर दिया गया है। जिसकी जांच कर कार्यवाही करने की मागं की है। इसी तरह अनारकली सिंह, साधना सिंह निवासी ग्राम बेलदार ने बताया कि जनपद सीईओ मैहर के निर्देशानुसार अनारकली और साधना के द्वारा विद्यालय में एमडीएम समूह सुचारू रूप से संचालित किया जा रहा था। लेकिन 14 अक्टूबर 2024 की शाम को अध्यापक द्वारा दूसरे समूह को संचालन दे दिया गया है। ग्राम जरियारी के समस्त ग्राम वासियों के द्वारा मांग की गई कि ग्राम जरियारी में रात्रि कालीन विद्युत कटौती की जाती है। जिसके सुधार के लिए किसानों ने कहा कि दिन के समय विद्युत कटौती कर रात में विद्युत सप्लाई दी जाए। ताकि खेतों में रात में भी सिंचाई की जा सके।

प्राथमिक स्वास्थ्य रैगांव एवं सिंहपुर में स्वास्थ्य शिविर संपन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रैगांव और ग्राम पंचायत भवन सिंहपुर में आयोजित स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग के कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन मंगलवार को किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में जनपद अध्यक्ष राजेश रावत उपस्थित रहे। इस अवसर पर रामसहाय गौतम, रैगांव सरपंच राहुल सिंह, अभय द्विवेदी, परियोजना अधिकारी सोहावल, सीबीएमओ डॉ अल्का महूले, डॉ आशीष त्रिपाठी, डॉ देवब्रत दीक्षित, डॉ राहुल सिंह, डॉ नेहा अग्रवाल, सुपरवाइजर ऋषिकेश गुप्ता,बिजेंद्र सिंह विजयराज सिंह, राजेंद्र बागरी सहित स्थानीय नागरिक उपस्थित रहें।

कार्यक्रम में अवधेश सिंह ने कहा कि महिलाओं एवं बच्चों की स्वास्थ्य और पोषण की सेवा देने वाली विभागीय महिला कार्यकर्ताओं की स्वास्थ्य जांच के लिए शिविर लगाये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मौजूदा समय की आम बीमारी ब्लड प्रेसर, सुगर, एनीमिया सहित ब्रेस्ट, सर्वाइकल, ओरल कैंसर की प्राथमिक जांच की सुविधा इन शिविरों में दी जा रही है। रैगांव में आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर में 305 संख्या शमिल रही। इनमें बीपी हाइपर के 37, शुगर रोगी 23, एनीमिया 55, गंभीर एनीमिया एचबी 7 या से उससे कम 16, नेत्र परीक्षण 37, प्रेस बायोटिक 30, मायोपिया 3, मोतिया बिंद 4 तथा अन्य 137 के स्वास्थ्य परीक्षण किये गये।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय की छात्रा का आरोप

गोल्ड मेडल के नाम पर हो रहा पक्षपात, उप राष्ट्रपति तक पहुंचा मामला

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की छात्रा अंजली सोनी ने विश्वविद्यालय प्रशासन पर मानसिक प्रताड़ना का गंभीर आरोप लगाया है। अंजली का कहना है कि गोल्ड मेडल के लिए पात्र होने के बावजूद विश्वविद्यालय ने उनका नाम दरकिनार कर दिया। अपने करीबी छात्रों को आगे बढ़ाया। यह मामला अब जांच के लिए उपराष्ट्रपति तक पहुंच चुका है।

राज्यपाल से मांगा 10 मिनट का समय: छात्रा ने सोशल मीडिया पर अपील करते हुए राज्यपाल और कुलपति से न्याय की गुहार लगाई है। उन्होंने 10 महीने से न्याय के लिए चक्कर काटने की बात कही। 16 अक्टूबर को विश्वविद्यालय में आने वाले राज्यपाल से 10 मिनट का समय मांगा है। छात्रा का वीडियो सामने आया है। जिससे विश्वविद्यालय में हलचल मची हुई है। छात्रा का आरोप है कि विश्वविद्यालय की छात्राओं को लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है। उन्होंने एक अन्य घटना का उदाहरण देते हुए कहा कि हाल ही में एक छात्रा ने इसी प्रताड़ना से तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। विश्वविद्यालय के कुल सचिव और कुलपति पर भी उन्होंने प्रताड़ना के आरोप लगाए हैं। वहीं, विश्वविद्यालय प्रशासन इस पूरे मामले पर चुप्पी साधे हुए है। कुलपति और कुल सचिव ने अब तक इस विषय पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

प्रशासन की ओर से अब तक नहीं हुई कार्रवाई: गौरतलब है कि यह पहली बार नहीं है जब विश्वविद्यालय में इस तरह का विवाद हुआ हो। पहले भी छात्रों और अध्यापकों के बीच मतभेद के कारण धरना-प्रदर्शन, विश्वविद्यालय गेट पर ताला लगाना जैसी घटनाएं हो चुकी हैं।

बुंदेली सेना ने मंदाकिनी नदी के सफाई में जुटी

दीपावली से पूर्व घाटों पर चलाया जाएगा सफाई अभियान

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट में दीपावली से पहले मंदाकिनी नदी को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त करने के उद्देश्य से बुंदेली सेना ने सफाई अभियान की शुरुआत की है। कर्वी के पुल घाट पर इस अभियान का पहला चरण मंगलवार को शुरू हुआ। जहां नदी के किनारे जमा पनसोखना चारा को हटाया गया। नदी में बाढ़ के दौरान पुल के पिलर के नीचे यह चारा फंसा हुआ था। जिसे सेना के स्वयंसेवकों ने निकाल कर घाट को साफ किया।

नदी में पॉलीथिन और कचरा न डालें: सेना के जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने बताया कि सफाई अभियान अब पुल घाट की सीढ़ियों और आसपास के क्षेत्र की सफाई तक विस्तारित होगा। इसके बाद सीतापुर के नदी घाटों पर भी यह अभियान चलाया जाएगा। अजीत सिंह ने लोगों से आग्रह किया कि वे नदी में पॉलीथिन और अन्य कचरा न डालें। जो प्रदूषण का प्रमुख कारण बनते हैं।

उन्होंने बताया कि हर साल दीपावली पर बड़ी संख्या में गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियाँ नदी में विसर्जित की जाती हैं, जिससे प्रदूषण का स्तर बढ़ता है। बुंदेली सेना ने लोगों से अपील की है कि वे मूर्तियों को नदी में विसर्जित करने के बजाय पुल घाट स्थित बरगद के चबूतरे पर रखें, जहां बाद में इनका भू-विसर्जन किया जाता है।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का मनाया गया जन्मदिन

डॉ. प्रभाकर ने बच्चों को मिसाइल मैन के अद्वितीय जीवन से प्रेरणा लेने की अपील की

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट कछार पुरवा स्थित कंपोजिट विद्यालय में राष्ट्रीय छात्र दिवस के उपलक्ष्य में भारत रत्न डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का जन्मदिन मनाया गया। इस अवसर पर विकास पथ सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. प्रभाकर सिंह ने बच्चों को मिसाइल मैन डॉ. कलाम के अद्वितीय जीवन से प्रेरणा लेने की अपील की।

डॉ. प्रभाकर सिंह ने बच्चों को स्वास्थ्य, स्वच्छता और पौष्टिक भोजन के महत्व पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर ही जीवन में सफलता के मार्ग को प्रशस्त करता है। इस अवसर पर डॉ. प्रभाकर सिंह की संस्था ने सभी बच्चों को शैंपू और रीयल फ्रूट जूस का निःशुल्क वितरण किया। जिससे बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके।

बच्चों को अपने लक्ष्यों को पाने की दी प्रेरणा: विद्यालय के शिक्षक विद्या सागर सिंह ने डॉ. कलाम के जीवन संघर्ष की कहानी साझा करते हुए बताया कि कैसे अभावों के बीच भी उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी कर देश की सेवा की। "डॉ. कलाम का जीवन किसी भी प्रेरक उपन्यास से कम नहीं है। उन्होंने देश को मिसाइल टेक्नोलॉजी में आत्मनिर्भर बनाया और राष्ट्रपति के रूप में भारत को नई दिशा दी।

प्रधानाध्यापिका उषा रानी त्रिपाठी ने बच्चों से मेहनत और अनुशासन के साथ अपने लक्ष्यों को पाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर विद्यालय के अन्य शिक्षकगण जैसे रचना यादव, गरिमा सिंह, ममता देवी, और लव कुश सिंह सहित कई छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

डॉ. कलाम के व्यक्तित्व को याद करते हुए डॉ. प्रभाकर सिंह ने कहा कि वे एक सर्वस्वीकृत भारतीय थे। जिनका जीवन हर जाति, धर्म और संप्रदाय के लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका योगदान न केवल विज्ञान के क्षेत्र में था। बल्कि उनके नैतिक मूल्यों ने उन्हें एक आदर्श नेता के रूप में स्थापित किया।

विकास परियोजनाओं को समय-सीमा में गुणवत्ता के साथ पूर्ण करे : प्रभारी मंत्री

अधिकारियों की समीक्षा बैठक संपन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री तथा सतना जिले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अधिकारियों की परिचयात्मक बैठक लेते हुए कहा कि जिले में चल रहे निर्माण और विकास परियोजनाओं के कार्य निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्ता के साथ पूरे किये जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि विकास योजनाओं में जन भागीदारी लेकर जनता को विकास कार्यों को जोडें तथा शहर को सुंदर और विकसित बनाने उनके सुझाव लें। प्रभारी मंत्री ने कहा कि स्मार्ट सिटी के कार्यों सहित अन्य विकास कार्यों को संधारण और संचालन के लिए जन भागीदारी और सहयोग लिया जाना अत्यंत आवश्यक होगा। इस मौके पर नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, विधायक सुरेंद्र सिंह गहरवार, विक्रम सिंह, महापौर योगेश ताम्रकार, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, स्पीकर राजेश चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष सतीश शर्मा, कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता, सीईओ जिला पंचायत सुसंजना जैन, कमिश्नर नगर निगम शेर सिंह मीना, वनमण्डलाधिकारी मयंक चांदीवल सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विकास योजनाओं की प्रापर मानीटरिंग सुनिश्चित की जायें ताकि निर्माण कार्य समय-सीमा में पूर्ण हो। उन्होंने कार्यों की गुणवत्ता के लिए तकनीकी इंजीनियरिंग से संबंधित टीम बनाकर पब्लिक आडिट भी कराने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि स्मार्ट सिटी के अंतर्गत सतना शहर में नागरिकों की सुविधा और सौन्दर्यीकरण के अनेक कार्य किये गये हैं। इन कार्यों के आगे संचालन और संधारण के लिए व्यवस्था भी बनानी होगी। उन्होंने कहा कि शहर के विकास के लिए योजना बनाये और जनप्रतिनिधियों सहित लोगों का सहयोग लें। जनता को यदि अच्छी सुविधा देंगे तो नागरिक भी खुशी से टैक्स देंगे। निर्मित परि सम्पत्तियों के रख-रखाव और नगर निगम को आत्म-निर्भर बनाने उपयोगकर्ता से भुगतान करे प्रणाली पर कार्य किया जाना होगा। प्रभारी मंत्री ने कहा कि निर्माण विभाग सभी निर्माणाधीन कार्यों में उसके पूर्णतः की समय-सीमा निर्धारित कर घोषणा का बोर्ड लगायें और सेवा निवृत्त अधिकारियों को साथ में रखते हुए शहर के लोगों की सलाहकार समिति बनाकर शहर को सुंदर बनाने उनके सुझाव लें। प्रभारी मंत्री ने कहा कि अगली बार से विभागवार समीक्षा बैठक लेकर गतिविधियों और कार्यों की समीक्षा की जायेगी। सांसद गणेश सिंह ने कहा कि सतना जिले में ग्रामीण विकास विभाग द्वारा निराश्रित गौ-वंशीय पशुओं को रखने अस्थाई बाडे बनाये गये हैं। प्रत्येक विकासखण्ड में एक स्थाई स्वरूप देने की योजना है। प्रभारी मंत्री ने नगर निगम, स्मार्ट सिटी और पंचायत ग्रामीण विकास विभाग के कार्यों की विस्तृत समीक्षा भी की। इस अवसर पर आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना ने बताया कि सतना स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट के तहत 941 करोड के कुल 72 प्रोजेक्ट स्वीकृत किये गये हैं। जिनमें 368 करोड के 48 प्रोजेक्ट पूरे कर लिये गये है जबकि 572 करोड के 24 प्रोजेक्ट प्रगतिशील है। नगर पालिक निगम के अंतर्गत उन्होंने प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना, जल प्रदाय योजना, सीवर लाइन, स्वच्छ भारत मिशन के कार्यों की समीक्षा की। इसी प्रकार ग्रामीण विकास के अंतर्गत मनरेगा, लेवर बजट, गौशाला, अमृत सरोवर और वृक्षारोपण कार्य की समीक्षा की गई। सीईओ जिला पंचायत ने जिले में 27 लाख 43 हजार 200 मानव दिवस श्रम के वार्षिक लक्ष्य की पूर्ति 50 प्रतिशत कर ली गई है। अब तक 13 लाख 49 हजार 721 मानव दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया गया है। जिले में 62 स्वीकृत गौशालाओं में 55 पूर्ण कर ली गई हैं। इनमें 48 गौशालायें स्व-सहायता समूहों द्वारा संचालित है। निराश्रित गौवंशीय पशुओं का रखने 92 अस्थाई बाडे बनाकर 162 हकारे रखे गये हैं। प्रभारी मंत्री ने इसे आदर्श व्यवस्था बताते हुए इन अस्थाई बाडों को एनजीओ और सामाजिक संगठनों को सौंपने के भी निर्देश दिये।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।